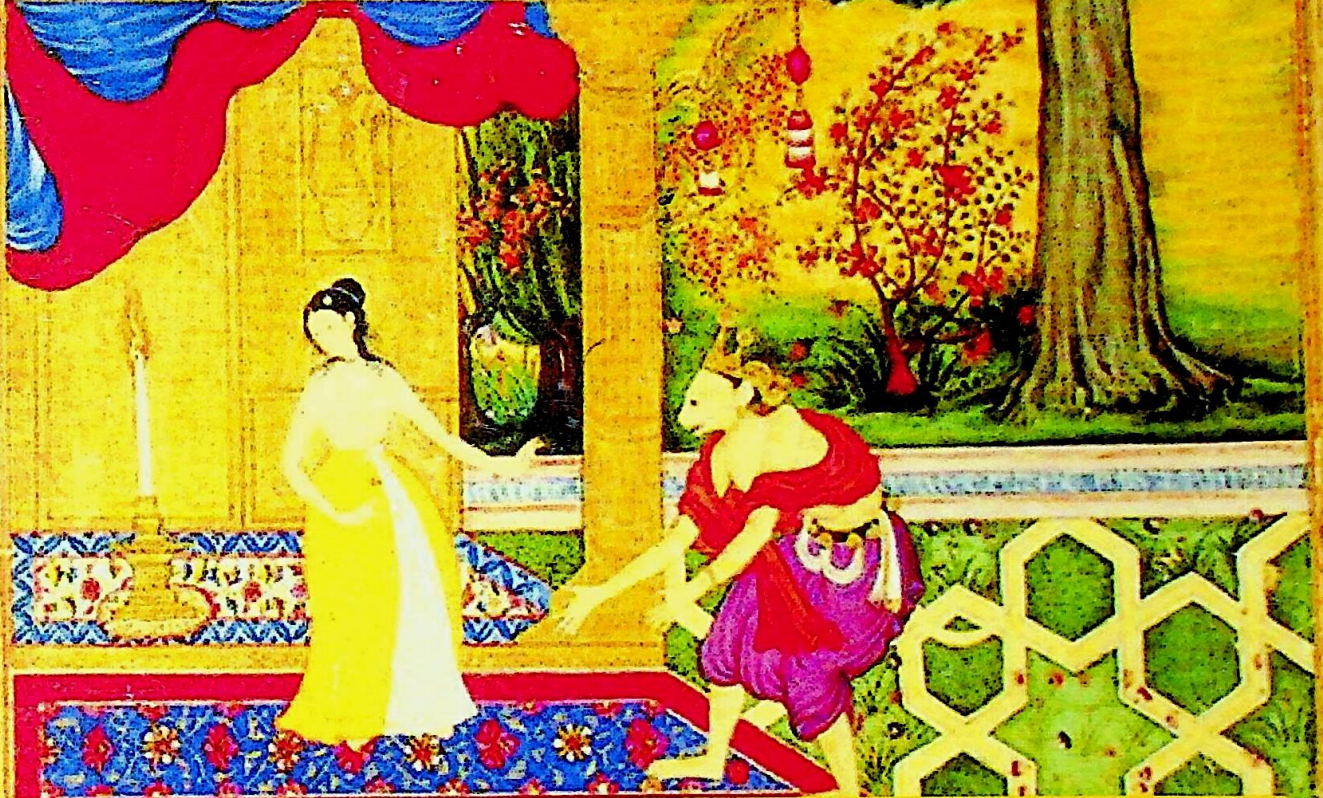


کہ از بنیت در پای سپیاط پیفتی سیا از شیندن خبر خیر را چنہ انما بسا دما
کرد و منونت پیش رفت و خواست کہ در پای سپیاط پیفتہ سیا درین



AIMAM-E-HIND: RAMA

An Epic Play

ON THE RAMAYANA IN URDU



इमाम—ए—हिंदः राम

(महाकाव्य रामायण पर आधारित नाटक)

नाटककार : डा. मोहम्मद अलीम

विषय विशेषज्ञ : प्रो. सत्यव्रत शास्त्री, ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

Note: This play is a registered property under the copyright law of the Government of India and Writer's Association Mumbai. Any type of unlawful use will be taken as a breach of the law.

प्रा. ३३-७-१९३३

काली प्रसाद न. गुप्ताचार्य

प्रा. ३३-७-१९३३

काली प्रसाद न. गुप्ताचार्य

This part is a reproduction of the original text of the Government of India. It is not a translation and is not intended to be used as a reference for the original text.

सीन नं :1

मक़ाम : राजा दशरथ का दरबार

(राजा दशरथ का दरबार लगा हुआ है। रौशनियों की बारिश हो रही है जैसे कि बहुत खुशियों भरा समां हो। उनके वज़ीर उनके बग़ल में कुर्सियों पर बैठे हैं और अफ़सरान हाथ बांधे खड़े हैं। दरबार का माहौल काफी खुशगवार है। कुछ रक्कासाएं रक्स कर रहीं हैं और माहौल को खुशगवार बनारही हैं।)

गीत:

आज की रात का दुनिया के लिए क्या है पयाम

हुस्ने कुदरत का सरे-शाम से है जलव-ए-आम

नूर बरसाते हैं तारों के छलकते हुए जाम

बन गया साज़े तरब हस्ति-ए-आलम का निज़ाम

सिर्फ जुगनू है जो दीवाना सिफ़त फिरता है

शम्मा ले कर कभी उठता है कभी गिरता है

आज सोती हुई दुनिया की किसमत है बेदार

साल भर बाद वह रात आई है दिल सिज पे निसार

(शायर : ब्रज नारायण चकबस्त)

(गीत ख़त्म होते ही रक्कासाएं वहां से रुखसत हो जाती हैं। राजा दशरथ फिर अपनी जगह खड़े हो कर अपने करीबी दरबारीयों से मुख़ातिब होकर कहते हैं।)

दशरथ : ईश्वर की कृपा से अब चारों राजकुमारों की उम्र शादी के लायक होगई है । और इसी खुशी में आज मैं ने यहां इस साज़-व-आवाज़ और रक्स व सुरूर का एहतेमाम किया है। जिसमें मेरे मुल्क की बाकमाल रक्कासाओं ने अपना फ़न पेश किया है।.....मुझे उमीद है कि आप सब भी इससे काफ़ी महजूज़ व लुत्फंदोज़ हुए होंगे ।

मेरी दुआ है कि ईश्वर इन लोगों को हर बुरी नज़र से दूर रखे । उनके अंदर अब हर तरह का इल्मो फ़ज़ल मौजूद है। जो भी उन्हें देखता है, शाबाश शाबाश कहेबगैर नहीं रहता है। हर तरफ़ उनकी ख़ूबसूरती और सलाहियत के चर्चे हो रहे हैं।

वज़ीर: आप ने बजा फ़रमाया हुज़ूर।

दशरथ: वाकई एक बाप के लिए इस से ज़्यादा खुशी की बात और क्या हो सकती है कि उसकी औलाद नेक हो और इल्म व फ़न में भी उनका मुक़ाबला करने की कोई ताक़त न रखता हो । मैं चाहता हूं कि अब राजकुमारों की शादी करदी जाए ताकि उनके अंदर एहसास-ए-ज़िम्मेदारी में और इज़ाफ़ा हो सके। आज न कल तो उन्हें तख़्तो शाही के सारे काम-काज तो देखने ही होंगेमेरी उम्र भी अब आप लोग देख ही रहे हैं। एक बुझते हुए चिराग़ की मानिन्द हूं । कब बुलावा आ जाए, किसी को क्या मालूम मेरी ख़्वाहिश है कि जहां मैं ने बेटों का सुख भोगा है , वहीं कुछ दिन बहुओं का भी सुख देख लूं।

वज़ीर : हमारे लिए तो ये बड़े फ़ख़ की बात होगी हुज़ूर ।

(दूसरे लोग भी मुस्कुरा कर अपनी खुशी का इज़हार करते हैं।)

(इतने में एक चौबदार दाखिल होता है। वह कहता है।)

चौबदार: अयोध्या महाराज की जय हो! श्री विश्वामित्र जी दरे-दौलत पर तशरीफ़ लाए हैं। उन्हें आप से मुलाक़ात की ख़्वाहिश है।

(राजा दशरथ बेहद खुश होते हैं। वह अपने वजीर की तरफ़ राज़दाराना अंदाज़ से देखते हैं। उन्हें समझ में नहीं आता कि मामला क्या है। फिर भी वह खुशी से आगे बढ़ते हैं। फिर एक कदम चलकर दरबारियों से मुखातिब हो कर कहते हैं।)

दशरथ : तख़लिया !

(हुक्म सुन कर सब वहां से चले जाते हैं। उनके जाते ही महर्षि विश्वामित्र दाख़िल होते हैं। राजा दशरथ आगे बढ़ कर दरवाज़े के पास उनका इस्तेक़बाल करते हैं।)

दशरथ: महर्षि के चरणों के दर्शन से जिस क़दर अपनी खुशकिस्मती पर नाज़ करूं, वह कम है। करम फ़रमाई पर जितना फ़ख़्रकरूं वह बहुत थोड़ा है। वाक़ई मेरा जन्म सफल हो गया हुज़ूर! फ़रमाईए, क्या हुक्म है ? जो भी आप चाहेंगे, वह मैं पूरा करने की कोशिश करूंगा। आपका हुक्म सर आंखों पर। आप ने हुक्म दिया होता, मैं हाज़िर हो जाता।

विश्वामित्र : मुझे आप से यही उम्मीद थी दशरथ माहराज। मुझे आप से ऐसी ही उम्मीद थी। शास्त्रों के मुताबिक़ चलना आपका धर्म है। आप बड़े खुशनसीब हैं कि राज पुरोहित वसिष्ठ जी जैसे गुरु के फ़ैज़ व बरकत से आप के चेहरे पर धर्म का जलाल बरस रहा है..... लेकिन आप से झिझक रहा हूं। दिल में एक ख़्वाहिष का इज़हार करते हुए हिचक सी हो रही है।

दशरथ : आप कैसी बात करते हैं हूज़ूर। आप अर्ज़ तो करें।

विश्वामित्र : इस से पहले मैं ये चाहता हूँकि आप मुझ से ये वादा करें कि आप मेरी गुज़ारिश को रद्द नहीं करेंगे।

(इस बात पर राजा दशरथ ख़ामोश हो जाते हैं। उन्हें समझ में नहीं आता है कि ऐसी क्या बात हो सकती है।)

विश्वामित्र : महाराज ! आप के दिल की बात समझ गया। आप नहीं चाहते कि आप मुझ से कोई पुख़्ता वादा करें ?

दशरथ : नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है। मगर ये सोच कर जरूर परेशान हूँ कि वादा तो कर लूँ , मगर कहीं उसको पूरा न कर सका तो ?

विश्वामित्र: मैं ने हमेशा आपको वादे पर खरा पाया है। मैं जानता हूँ कि आप कौल व फ़ेल के बहुत सच्चे और पक्के हैं। और यही बात आपके शायाने—शान भी है.....आप के पास बहुत उमीदों से आया हूँ और मैं जानता हूँ कि आप के अलावह इसे पूरी करने की और किसी में ताक़त भी नहीं है.....अगर आप कहें तो अर्ज करूँ ?

दशरथ : हां, हां. फरमाईए। (फिर अपने आप से) हे भगवान ! महर्षि कोई ऐसी चीज़ न मांग दें जिससे मैं पूरा न कर सकूँ । आप मेरी हिफाज़त करें मालिक ।(फिर संभल कर) महर्षि ! फरमाईए, आप क्या कहना चाहते हैं ?

विश्वामित्र: महाराज ! आप जानते हैं कि बरसों से मैं एक बड़े यज्ञ में मशगूल हूँ। मगर बुरा होमोरीच और सबाह नामी राक्षसों का जो यज्ञ को ठीक से पूरा होने ही नहीं देते। इधर मेहनत कामयाब होने के करीब आई , उधर उसने गोश्त और खून बरसा कर सारा किया धरा अकारथ कर दिया.....मैं बस यह चाहता हूँ कि आप अपने फरज़ंद जिगर , हर दिल अजीज़ बेटे रामचंद्र को कुछ दिनों के लिए मेरे साथ भेज दीजिए ।

दशरथ : (परेशान होते हुए, वह मुआमले की नज़ाकत को समझते हुए अपने आप से कहते हैं।) रामचंद्र तो अभी बहुत कम उम्र के हैं। राक्षसों के आगे उनकी बिसात ही क्या है समझ में नहीं आ रहा है कि विश्वामित्र क्या कह रहे हैं । दुनिया भरी पड़ी है। हज़ारों राजा महाराजा मौजूद हैं। यह उनके पास क्यों नहीं गए मदद मांगने ?

(फिर विश्वामित्र से मुख़ातिब होकर)

अभी रामचंद्र का सिन है क्या

कहां उन में ताबो—तवां है अभी

नहीं दांत उखड़े हैं दूध के

भरी दूध से जुबां है अभी

शिवामित्र: (मुस्कुराकर)बेशक आप के नज़दीक श्री रामचंद्र ऐसे ही है। मगर हम लोगो की नज़र से देखिए तो कुछ और ही मालूम होंगे। अगर आप चाहते हैं कि श्री रामचंद्र जी के इल्म व फ़न का डंका बजे ,उनकी बहादुरी की सारी दुनिया कायल हो , और एक ख़ूबसूरत व बाकमाल बहु घर में आए, तो बस हां कह दीजिए।

(राजा दशरथ को समझ में नहीं आता है किमहर्षि ने उन्हें किस उलझन में डाल दिया हैं।)

विश्वामित्र: आप चाहें तो अपने बाकमाल वज़ीरों से सलाह मशिवरा कर लीजिए। ताकि दिल की उलझन दूर हो।

दशरथ : (अपने आप से)वज़ीर व मुशीर अगर हां कह भी दें तो मैं भला कब मानने वाला हूं। मुझे तो रामचंद्र की जुदाई किसी तरह भी एक पल के लिए ग़वारा न होगी।

विश्वामित्र: अगर आप को वज़ीरों व मुशीरों से सलाह व मशिवरा करना मंज़ूर नहीं है तो गुरु वशिष्ठजी से सलाह कर लीजिए । देखिए वह क्या राय देते हैं।

(राजा दशरथ अब भी खामोश रहते हैं।)

विश्वामित्र: आप जितनी चाहिए, चुप्पी साधिए। मुंह में कील दीजिए। मगर नतीजा कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। बड़ी हैरत की बात है कि आप ऐसे धर्मात्मा राजा इस तरह बगलें झांके ?

दशरथ: ऋषि राज जी। आपको काम से काम होना चाहिए। आप की खिदमत गुज़ारी के लिए मैं हाज़िर हूं। फौजें भरी पड़ी हैं।सूर वीरों के दल के दल जान कुरबान करने को मौजूद हैं।

चलिए, लाओ लशकर के साथ मैं आप के साथ चलता हूं । आप के दुशमनों को वह मज़ा चखाऊंगा कि वह भी क्या याद करेंगे कि किस इंसान से पाला पड़ा है.....आप शौक से दोबारा यज्ञ कीजिए।आपकी हिफ़ाज़त में मैं जान लड़ाऊंगा और यज्ञ को कामयाब बनाऊंगा।

विश्वामित्र: मगर मुझे तो हर हाल में राम ही चाहिए।

॥ १ ॥

॥ २ ॥

॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

दशरथ: मगर ये तो गौर फ़रमाईए कि आपका यज्ञ दस रोज़ में खत्म होगा । इतनी मुद्दत तक मैं उसके बिना रहूंगा कैसे । मैं किसको देखकर जीऊंगा । अगर एक लम्हा भर के लिए भी रामचंद्र मेरी अंखों से ओझल होते हैं तो मुझे चैन नहीं पड़ता । मेरा तो दम ही फ़ना हो जाएगा ।

विश्वामित्र: कैसी बात करते हैं आप महाराज । आप के मुंह से ऐसी बातें षोभा नहीं देती ।

दशरथ: (कुछ पल की ख़ामोशी के बाद) ठीक है । जैसी आप की मर्जी । अगर मेरी किस्मत में यही लिखा है तो यही सही ।

(विश्वामित्र खुश हो जाते हैं । वह राजा दशरथ की तरफ देख कर कहते हैं ।)

विश्वामित्र : अब और देर न कीजिए । श्री रामचंद्र को जल्दी से मेरे साथ रवाना कर दीजिए ।

दशरथ: आईए हुजूर । मैं उन्हें अभी हुक्म देता हूँकि वह आप के साथ सफ़र पर जाने की तैयारी करें ।

(दोनों फिर वहां से निकल जाते हैं ।)

(अंधेरा)

सीन नं :2

मक़ाम: विश्वामित्र का आश्रम (जंगल)

(श्री रामचंद्र जी और उनके भाई लक्ष्मण एक जगह तीर धनुष के साथ तैयार व चाको-चौबंद खड़े बातें कर रहे हैं।)

राम: महर्षि जीमौनवर्त धारण किए हुए हैं। अब वह छः दिनों तक इसी तरह खामोश रहेंगे। सब और मारीच राक्षस के आने का वक़्त भी कोई तय नहीं है। जब उनके सर पर भूत सवार हो जाता है तो आ धमकते हैं और यज्ञ को नाकाम बना कर चले जाते हैं।अब हम लोग भी छः रोज़ तक बराबर आंखें न झपकाएंगे। क्योंकि यज्ञ का कामयाबी के साथ पूरा होना लाज़मी है। महर्षि ने न सिर्फ़ हम पर भरोसा किया है बल्कि हमें सारे जंगी उलूम की जानकारी दे कर उनके मुक़ाबले के लिए बेहतर तरीक़े से तैयार भी किया है। अब हमें हर हाल में अपना धर्म निभाना है और उनकी उम्मीदों पर खरा उतरना है। (फिर झट अपनी जगह से थोड़ा आगे बढ़ कर बेहद चौकन्ना अंदाज़ में)भाई। होशियार हो जाओ। तीर कमान संभाल लो। दिन रात की ज़रा सी तकलीफ़ में सारा बेड़ा पार है।

लक्ष्मण: (उसी फुर्ती से) फ़क़त आपके हुक्म का इंतज़ार है बड़े भैया। मैं तो आपकी ख़िदमत में पहले से ही कमर बांधे अपना हथियार तैयार लिए बैठा हूँ।

(वह कहते हुए झट अपनी जगह से खड़ा हो जाता है।)

राम: तुम ने देखा लक्ष्मण। जब से हम यहां आए हैं, किसी की मजाल तक नहीं हुई कि वह यज्ञ मंडप के इर्द गिर्द चक्कर काट सके। परिंदे भी रास्ता भूल गए। हम ने भी पूरी मुस्तैदी से अपना काम किया है। तभी तो हमारी चौकसी को अख़्तियार किए हुए आज छठा दिन हो गया और राक्षसों ने इधर आने कि हिमाक़्त भी नहीं की है।अब तो समझो कि यज्ञ की कामयाबी का लम्हा क़रीब आ गया है। देखो लक्ष्मण, ख़ूब होशियार रहो। हो सकता है कि कोई राक्षस हमारी ताक में हो और हम पर हमला करने का मुनासिब मौक़ा ढूँढ़ रहा हो। ख़बरदार ! हमारे रहते कोई इधर भटकने न पाए।

(राम जी अभी इतना बोल ही पाए थे कि एक वेदी की आग दूसरी जगह लौ देने लगती है। चारों ओर गहरा सन्नाटा छा जाता है और अंधेरा सा छाने लगता है। डरावनी आवाजें सुनाई देने लगती हैं।)

राम: देखो भाई। आग की लपट कहां से कहां पहुंच गई। यह आसार निराले हैं। जब यज्ञ खत्म होने को होता है तब अगर आसमान में ऐसी चीजें नज़र आने लगे तो समझो कि कुछ बुरा होने वाला है।अब हमें पूरी तरह मुस्तइद और चाको-चौबंद रहने की ज़रूरत है।महर्षि जी मंत्रों के जाप में मसरूफ़ हैं और यह उन ही के लायक है।

(यकायक बादलों की गरज और चमक के साथ डरावनी आवाजें सुनाई देने लगती हैं। खौफो हरास का माहौल छा जाता है। दोनों भाई तीर कमान ले कर पूरी तरह लड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं।)

(राक्षस यकायक खून व गोشت की बारिश शुरू कर देते हैं। मगर रामचंद्र जी और उनके भाई लक्ष्मण के तीर उन्हें ज़मीन पर गिरने से पहले ही फ़ना कर देते हैं। राक्षस भी उनको कमज़ोर करने और हराने में अपनी पूरी ताक़त झोंक देते हैं। वह गोल दर गोल आ कर पूरी शिद्दत से उन पर हमला करते हैं। काफी देर तक यह सिलसिला चलता रहता है।)

राम : देखा लक्ष्मण। राक्षसों का गोشت खाना और खून बरसाना। मैं सभी को आसमान में ही ढेर कर दूँ। मगर यह कुदरत के खिलाफ़ बात होगी। मुख़ालिफ़ों में इस वक्त्र वे भी शामिल हैं जिनकी मौत अभी नहीं लिखी है। अगर मेरा बाण उनको निशाना बनाता है तो उनकी भी ख़ैर नहीं। और जब ख़ैर नहीं तो समझो कि कायानात और इस दुनिया का निज़ाम दरहम-बरहम हो जाएगा। और इससे महर्षि के यज्ञ में भी ख़लल पड़ने का अंदेशा है।

लक्ष्मण : फिर क्या किया जाए बड़े भैया ?

राम: मुझे मारीच राक्षस पर भी रहम आ रहा है। गो कि वह बदकार और बुरा है, मगर यह भी जानता हूँ कि वह बचपन में ही यतीम हो गया था। अब ऐसों को मारने के लिए हाथ नहीं उठता।मुझे तो सब पर भी तरस आ रहा है। वह बिज़्ज़ात राक्षस नहीं, बल्कि अगस्त

ऋषि की बददुआ ने उसे कुछ का कुछ बना दिया है। ...उसने बड़े बड़े धर्म के काम भी किए हैं। परमेश्वर की याद में खूब दिल लगाया है। मगर परमेश्वर के एक हुक्म को न मानने से वह रास्ते से भटक कर दूर चला गया और ईश्वर के गुस्से और अताब का शिकार हो गया। पस मैं चाहता हूँ कि उसको निजात दे कर उसका उद्धार कर दूँ। बाकी बचे राक्षस भी अपने किए के मुताबिक दूसरे जन्मों में निजात पा लेंगे।

लक्षण : लेकिन बड़े भैया ! हैं तो वे सब हमारे दुश्मन ही। इससे क्या फर्क पड़ता है कि माजी और गुजरे ज़माने में वे क्या थे। अभी तो वह राक्षस ही हैं जो महर्षि के यज्ञ में खललअंदाज़ होने की कोशिश कर रहे हैं। और ऐसा कई बार वे कर भी चुके हैं। दुश्मनों के तर्ई इस तरह की नर्मी दिखाना ठीक बात नहीं।

(रामचंद्र भाई के भोलेपन पर मुस्कुराते हैं। फिर निशाना साधते हुए कहते हैं।)

राम : (पुरजोश अंदाज़ में) अभी मारीच और सबा राक्षस को दोस्ती में दुश्मनी को मज़ा चखाता हूँ।

(राम जी तीर चलाते हैं। हर बार उनका निशाना ठीक बैठता है और दोनों समुंदर में चोट खा कर गिर जाते हैं। राक्षसों की जमाअत में भगदड़ मच जाती है। आखिरी लड़ाई खूब जवांमर्दी से लड़ी जाती है। यहां तक कि फ़तह नसीब होती है।)

राम : देखा लक्ष्मण ! किस तरह मैं ने इन राक्षसों को चोट पहुंचा कर समुद्र में गिरने के लिए मजबूर कर दिया। आखिर उनमें मुझ से मुक़ाबले की भला ताक़त कहां से आ सकती है।

लक्ष्मण : (खुश होते हुए) आप ठीक कहते हैं भैया।

नोट : इस वाक्या को बड़े एलईडी स्क्रीन पर स्टेज पर कंप्यूटर ग्राफिक्स के ज़रिये दिखाया जाएगा।)

(यज्ञ ख़त्म होने का शंखनाद होता है। विश्वामित्र अपने आश्रम से बाहर आते हैं और रामचंद्र जी को गले लगा लेते हैं। लक्ष्मण को भी ख़ूब ख़ूब प्यार करते हैं। आसमान से देवी देवता भी उनकी बहादुरी के गीत गाते हैं।)

(अंधेरा)

गीत :

राम के नाम से आराम की सूरत देखी

आंख से इज़्ज़त व इकाराम की सूरत देखी

दफ़ा हो रंज अगर लब पे उनका नाम आ जाए

मुक्ति मिल जाए अगर जुबां पे बस उनका नाम आ जाए

पाप उनके नामों को रट लेने से कट जाता है

पाठ से पाठ यमराज का घुट जाता है

टाट इफ़लाक व फ़लाकत भी लुट जाता है

आ के यमराज सिरहाने से पलट जाता है

दिल फड़क उट्टा जहां राम की झांकी देखी

खुली आंखें जो वह झप आंख ने बांकी देखी

ग़मे दुनिया, ग़मे फ़र्दा व ग़मे इसियां न रहा

देवता हो गया इंसान से वह इंसां न रहा। (शायर : द्वारका प्रसाद उफ़क़)

सीन न. 3

मक़ाम : राजा जनक का दरबार शाही

(सुबह का ख़ूबसूरत समां है। राजा जनक अपने महल में पूजा पाठ में मशगूल हैं। तभी उनका विश्वास पात्र सतानंद आ कर कहता है।)

सतानंद : जनक महाराज की जय हो। महर्षि विश्वामित्र दो नौजवानों में हमराह तशरीफ़ लाए हैं। वह आपसे मुलाक़ात की शर्फ़ बाज़याबी चाहते हैं।

(राजा जनक इस बात को सुन कर चौंक जाते हैं। जल्दी से पूजा पाठ खत्म कर के खड़े होते हैं। और उनसे मुख़ातिब हो कर खुशी से कहते हैं।) क्या यह सच है कि महर्षि विश्वामित्र यहां तशरीफ़ लाए हैं ?

कारिदा : जी हुज़ूर ! और उनके साथ दो बेहद हसीन और ख़ूबसूरत नौजवान भी हैं। दोनों देखने में किसी मुल्क के शहज़ादे मालूम होते हैं। बहुत बाअरोब मगर प्यारा चेहरा है उनका। ऐसे हसीन नौजवान इससे क़बल तो मैं ने अपनी ज़िंदगी में नहीं देखा।

राजा जनक : (सोच में पड़ जाते हैं।) महर्षि विश्वामित्र जी के साथ ये दो नौजवान कौन हैं ?.....ख़ैर, उन्हें इज़्ज़त व इकराम के साथ महल में ले कर आओ और उनकी ख़ातिर व मदारात की पूरी तैयारी करो। रानी साहिबा को भी इत्तेला कर दो कि महर्षि जी तशरीफ़ लाए हैं।

सतानंद : जी हुज़ूर ।

(कारिदा चला जाता है। राजा जनक कुछ हैरानी में पड़ जाते हैं कि महर्षि दो अजनबी नौजवानों के साथ किस वजह से तशरीफ़ लाए हैं।)

राजा जनक : मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि माजरा क्या है। महर्षि के साथ यह दो नौजवान कौन हैं और उनके यहां आने का मक़सद क्या है ?

॥ १ ॥

॥ २ ॥

॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

॥ १० ॥

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥

॥ १३ ॥

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

॥ १७ ॥

॥ १८ ॥

॥ १९ ॥

॥ २० ॥

(इतने में महर्षि श्री राम और लक्ष्मण के साथ अंदर तशरीफ़ लाते हैं। दोनों तीर कमा से लैस हैं। राजा जनक की निगाहें कुछ पल के लिए राम जी पर ठहर कर रह जाती हैं। दोनों बड़े अदब से उनको प्रणाम करते हैं। राजा जनक भी उनको देख कर खुश होते हैं।)

राजा जनक: आपके कदमों की खाक ने इस महल की किस्मत संवार दी महाराज। मैं तो समझता हूँ कि आपके यहां आने से मेरी जिंदगी कामयाबी हो गई। क्या आपकी तशरीफ़ आवरी किसी खास मक़सद से हुई है ? अगर मुझे मालूम हो जाए तो ज़हे नसीब।

विश्वामित्र : आपकी ज़र्रा नवाज़ी का बेहद शुक्रिया जनक महाराज।यह दोनों राजकुमार अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के फरज़ंद अरजुमंद हैं। बड़े राजकुमार का नाम श्री राम चंद्र है और छोटे को श्री लक्ष्मण कहते हैं। इन दोनों ने मिल कर न सिर्फ़ मेरे यज्ञ को कामयाब बनाया है बल्कि साथ ही सबा और मारीच नामी राक्षसों का खात्मा भी किया है। इन दोनों नौजवानों की बहादुरी के किस्से जितना बयान किया जाए वह कम है।

(राजा जनक बेहद खुश होते हैं।)

राजा जनक : मेरी खुशी है कि आप जैसे लोग मेहमान बन कर मेरे दौलत कदे पर तशरीफ़ लाए हैं। मेहरबानी कर के बैठिए।

(सब सामने रखी आलीशान कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। कुछ पल खामोशी रहती है। श्री राम और लक्ष्मण पुरतजस्सुस नज़रों से महल को देखते रहते हैं।)

राजा जनक : मेरे लायक कोई ख़िदमत हो तो अर्ज़ करें। आप लोग क्या लेना पसंद करेंगे ?

विश्वामित्र : यहां के धणुष की धूम चारों लोकों में है। और उसकी करिश्माई खूबी से हम सब वाकिफ़ हैं। लेकिन आज उसे देखने का मुझे भी बहुत शौक़ हुआ। चुनांचे इन दोनों नौजवानों को भी अपने साथ लेता आया।

राजा जनक : मैं तामीले इरशाद को अपने लिए फ़ख़ की बात समझता हूँ। मगर इससे क़ब्ल अगर इजाज़त हो तो धणुष के मुताल्लिक़ चंद बातें अर्ज़ कर दूँ ?

विश्वामित्र : हां हां। जरूर कहिए। हम लोग आए ही इसीलिए हैं कि धनुष की अजीब व गरीब शक्ल देखें और वह हालात भी सुनें जो इसकी अजमत और बड़ाई के बारे में सारी दुनिया में मशहूर है।

राजा जनक : यह धनुष महादेव शिव का एक अनोखा वरदान है हमारे लिए। इसकी खुसूसियत यह है कि इसको न तो कोई आजतक अपनी जगह से हिला पाया और न ही उठाने की ताकत ही आई। बड़े बड़े बहादुर राजकुमार इस गर्ज से इसे उठाने के लिए यहां आए उनकी बहादुरी का सारे आलम में चर्चा हो। मगर नाकाम रहे।

विश्वामित्र : हमारी खुशनसीबी होगी अगर हमें भी इसे देखने का मौका मिले।

(राजा जनक फौरन ताली बजा कर अर्दली को अंदर आने का हुक्म देते हैं। एक अर्दली हाज़िर होता है।)

राजा जनक : धनुष को दरबार में जितनी जल्दी हो लाया जाए।

(वह चला जाता है। कुछ पल खामोशी रहती है।)

राजा जनक : (अपने आप से) क्या यह दोनों नौजवान भी इसी गर्ज से आए हैं कि अपनी जोर आजमाई इस पर करें ? मगर मुझे नहीं लगता कि कामयाबी इनका मुकद्दर है।

(इतने में धनुष को एक लोहे के रथ पर लाया जाता है। वज़ीर और दरबार के बाकीलोग भी जमा हो जाते हैं। रावण और अन्य राजकुमार भी वहां धनुष को तोड़ने के लिए एकत्र हो जाते हैं। एक भीड़ सी लग जाती है। सीता देवी भी अपनी सहेलियों के हमराह छुप कर एक कोने में खड़ी हो कर यह नज़ारा देखने लगती हैं।)

राजा जनक : महाराज ! यही वह धनुष है जिसको बुजुर्गों के जमाने से मेरा खानदान पूजता चला आ रहा है। और जिसके सामने तमाम राजों महाराजों के लिए अपना सर अदब से झुकाना लाज़मी है।

(विश्वामित्र और राम जी और लक्ष्मण भी अदब और इश्टियाक से खड़े हो जाते हैं। गौर से धनुष को देखने लगते हैं। सारी निगाहें भी इन दोनों नौजवानों पर टिक जाती हैं। और उसे आगे सरे तसलीम ख़म कर देते हैं।)

राम : सचमुच बड़ा अजीब व ग़रीब धनुष है।

राजा जनक : मगर इससे पहले की आप ज़ोर आजमाई करें। यहां दूर दराज़ इलाकों से तशरीफ़ लाए बाकी राजकुमारों से मैं गुज़ारिश करूंगा कि अगर वह अपना हाथ आखिरी बार आजमाना चाहते हैं तो ज़रूर आजमा लें ताकि यह कहने का मौका न रहे कि उनसे यह हक़ छीन लिया गया था।

रावण : (ऊंची और बारोअब आवाज़ में) मुझे भी एक मौका दिया जाए।

राजा जनक : जी ज़रूर लंका महाराज। आईए।

(रावण आगे आता है। वह डील डौल के ऐतबार से सबसे भारी है। उसे घमंड भी है कि वह आसानी से उसे उठा लेगा।)

सब की निगाहें उस पर टिक जाती हैं। मगर जैसे ही वह धनुष के पास जाता है और उसे उठाने की कोशिश करता है, उसे एक तेज़ झटका सा लगता है और वह धड़ाम से ज़मीन पर गिरता है। सारे लोग उसकी लाचारी पर हंस पड़ते हैं।)

कुछ पल वहां ख़ामोशी रहती है। रावण की लाचारी देख कर बाकी राजकुमारों की हिम्मत भी नहीं होती आगे आने की।)

राजा जनक: अगर कोई और अपना हाथ आजमाना चाहें तो आजमा सकते हैं।

(कोई जवाब नहीं देता। तभी राम कहते हैं।)

राम : अगरआपकी इजाज़त हो तो मैं भी इस पर ज़ोर आजमाई कर के देखना चाहता हूं।

विश्वामित्र : (खुशी से) बहुत शौक से ऐसा कीजिए राजकुमार।

(राम जी आगे बढ़ते हैं। धणुष के पास जाते हैं। सारी निगाहें उन पर टिकी होती हैं।)

(वह धणुष को छूते हैं। दिल ही दिल में कुछ दुआ पढ़ते हैं और फिर जैसे ही उसे उठाते हैं, अजीब व गरीब तरीके से धणुष उनके हाथ में आ जाता है। और फिर उसको चढ़ाने लगते हैं।)

(आसमान व ज़मीन पर इस ज़ोर आजमाई की वजह से अजीब व गरीब आवाज़ें आने लगती हैं जैसे कि कोई तूफ़ान आ गया हो। लेकिन अखीर में राम चंद्र जी धणुष को चढ़ाने में कामयाब हो जाते हैं। और महल में खुशी से उनकी बहादुरी की जय जयकार होने लगती है।)

लोग : राजकुमार श्री राम चंद्र जी की जय हो। श्री राम चंद्र जी की जय हो।

(कुछ देर तक यही गूंज सुनाई देती रहती है। उन पर आसमान से देवता फूल बरसाते हैं।)

राजा जनक : मुझे बेहद खुशी है कि राजकुमार श्री राम चंद्र ने वह कारनामा अंजाम दिया है जिसे पूरा करने की ताकत किसी राजा महाराजा में न थी। समझ में नहीं आता कि अपनी खुशी का इज़हार किन अलफ़ाज़ में करूं। मेरी तो मुराद ही पूरी हो गई।मैं ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि अपनी बेटी सीता की शादी उसी नौजवान से करूंगा जो इस धणुष को उठा लेगा और उसे तान कर दिखाएगा। और यह काम श्री राम चंद्र जी ने कर दिखाया।

(सीता जी इस बात को सुन कर शरमाती हैं। और सहेलियां भी उनको टहोका लगाती हैं। रावण और दूसरे राजकुमारों को बुरा लगता है। और वे पेचोताब खा कर रह जाते हैं।)

विश्वा मित्र : (मुस्कुरा कर) इन्हें अपने साथ यहां लाने का मकसद भी यही था।

राजा जनक : अगर आप इजाज़त दें तो मैं महाराज दसरथ को इस शादी के वास्ते बाज़ाब्ता तौर पर पैग़ाम रवाना करूं ताकि पूरी धूमधाम से शाही अंदाज़ में शादी हो सके और जिसे लोग रहती दुनिया तक याद रखें ?

विश्वा मित्र : आपकी राय मुनासिब है। आप यह पैग़ाम ब खुशी राजा दसरथ तक भेज सकते हैं।

(एक बार फिर श्री राम चंद्र जी की जय जयकार होने लगती है।)

अंधेरा

गीत :

फूली हुई उफ़क पे थी रंगी शफ़क तमाम
महकी हुई फ़जा में बसा था सकूते शाम

सखियों के साथ झूमती जाती थीं नेकनाम
मुड़ मुड़ के देखती हुई पीछे दमे खराम

बुलबुल की मस्तियां थीं यह गोया बहार में
गुंचों के मुंह से फूल झड़े लाला ज़ार में

लड़ती थी आंख तीर सी चलती थीं पुतलियां
गुचे से खार खा के उलझती थी पुतलियां

होती थी छेड़छाड़ चमकती थीं बिजलियां
चेहलों से चौक चौक के उठती थीं बदलियां

नज़रें उड़ीं इधर उधर आंचल सरक गया
बूटों की ओट में महे काम ठिठक गया

बोली सहेलियां कि सयानी बहक गई
आंखों में धूल झोंक के नादां बनी रहीं

चितवन में है कटार तो लब पर नहीं नहीं
आंखें कहीं हैं दिल तो पाव हैं कहीं

चुपके से मुस्कुरा के कहा गुल नज़ार ने
आंचल पकड़ लिया है नसीमे बहार ने

(शायर : जगेश्वर नाथ बेताब बरेलवी)

नोट : श्री राम चंद्र और सीता जी शादी को इस गीत के जरिये से दिखाने की कोशिश की जाएगी।

सीन न. 4

मक़ाम : राजा दशरथ का महल

(राजा दशरथ की अपने बेटे श्री राम जी के साथ तख़्त नशीनी को ले कर राज़दाराना बातें हो रही हैं।)

दशरथ : मेरे प्यारे बेटे राम चंद्र! मैं बहुत ज़माना देख चुका हूं। मेरे सारे बाल सफ़ेद हो गए। ज़िंदगी का कोई सुख ऐसा नहीं है जिससे मेरी सैरी हासिल न हुई हो। सौंकड़ों यज्ञ कर डाले। हर किस्म के यज्ञों से नीयत भर ली। अब और किसी चीज़ की हवस बाकी नहीं रही। मगर कोई आरजू है तो सिर्फ़ तुम्हें राज पाट देने की। तमाम रियाया तुम्हारी ताजपोशी के लिए दुआएं मांग रही है। कौन है जिसे तुम्हें राज सिंहासन पर जलवा अफ़रोज़ देखने की ख़्वाहिश न हो। ईश्वर का हज़ार हज़ार शुक्र है कि मेरी मुराद भी कल पूरी होने वाली है।

(राम चंद्र जी ख़ामोशी के साथ अपने वालिद मोहतरम की बातें सुनते रहते हैं। राजा दशरथ उनके और पास आते हैं और कुछ ज़्यादा तवोज़्जोह मर्कूज़ करते हुए कहते हैं।)

दशरथ : एक राज़ की बात कहता हूं। उसे अपने पास ही रखना। किसी दूसरे के कानों कान ख़बर न होने पाए।

(राम चंद्र थोड़ा चौंक कर देखते हैं।)

राम : जी फ़रमाईए।

दशरथ : मेरे लख़्ते जिगर ! इधर मैं इस बात से खुश हूं कि कल तुम्हारी ताजपोशी होने वाली है। सारी तैयारियां मुकम्मल हो गई हैं। पूरे मुल्क में खुशी के शादियाने बज रहे हैं।मगर यकायक दिल को एक झटका सा लगता है। फिर अजीब किस्म की एक बेचैनी मुझ पर ग़ालिब आने लगती है।

राम : (हैरत से) किसी तरह की बेचैनी अब्बा हुज़ूर ?

दशरथ : गुज़श्ता कई रातों से एक ही ख़्वाब मुझे बार बार परेशान कर रहा है कि सलतनत में कुछ रुकावट और मुसीबत आ गई है। जबकि हालात बिल्कुल बेहतर और अच्छे मालूम होते हैं।

राम : यह सिर्फ एक परेशान सा ख़्वाब है अब्बा। और कुछ नहीं। आप ख़ातिर जमा रखिए। सब कुछ ठीक ठाक तरीक़े से अंजाम पा जाएगा।

दशरथ : (गहरी सांस ले कर) काश कि ऐसा ही हो। ऐसा ही हो मेरे लाल।.....मगर एक दूसरी बात भी मुझे बहुत परेशान किए देती है। अब तक जितने भी ज्योतिषियों ने मेरी जन्म पत्री देखी है, सभी ने एक ही बात बताई है कि जब सूरज मंगल राहु तुम्हारी रास पर होंगे, तब तुम्हारी ज़िंदगी का आफ़ताब गुरुब हो जाएगा। चुनांचे आजकल वही सितारे मेरी रास पर आ गए हैं। बेटे ! मुझे मौत की परवाह नहीं है। जितनी ज़िंदगी मुक़द्दर थी वह मैं ने जी ली। अब तबीयत सैर हो चुकी है। ख़याल तो बस एक ऐसे वक़्त का है जो कि मौत के बाद भी रुह को चैन नहीं लेने देगी।

जो करना हो आज ही कर ले

काल काल क्या करनी

शुभ कार्य में ऐ मन मूरख

काहे भेदा भरनी

दिल यही चाहता है कि अभी तुम्हारा राज तिलक कर के इस अहम काम से छुटकारा हासिल कर लूं।

राम : ऐसी भी क्या जल्दी है अब्बा ? बस एक ही रात की तो बात है। बल्कि अगली सुबह ही सब कुछ अंजाम पा जाएगा।

दशरथ : मगर बेटा, दिल के इस खटके का क्या करूं जो हर वक़्त टहोका लगाता रहता है कि कुछ न कुछ अनहोनी और बुरा होने वाला है। ख़ैर, तुम जाओ। ईश्वर का ध्यान करो।

राज गद्दी के एक रोज़ कबल रात को जागने और वर्त रखने का दस्तूर पुरखों से चला आ रहा है। इसलिए तुम भी इस बात का खयाल रखना।

राम : जी अब्बा हुजूर।

दशरथ : अपनी शरीके हयात श्री जानकी सीता को भी साथ बिठाना। मैं बस सुबह होते ही तुम्हारे सर पर ताजे सुलतानी की चमक-दमक देखना चाहता हूँ।

राम : जी अब्बा।

दशरथ : सुनो, दुनिया में तीन चीजों से हमेशा ही फसाद होते रहे हैं। और अब तक लाखों करोड़ों जान सिर्फ इस वजह से गंवाए गए हैं।

राम : वह क्या अब्बा ?

दशरथ : ज़र यानि दौलत, ज़मीन और ज़न यानि औरत। इन तीनों को ले कर बहुत मोहतात रहना। दूरअंदेशों ने क्या ख़ूब कहा है कि ज़हर ज़हर नहीं है, बल्कि लक्ष्मी ज़हर है। उसका सबूत दरकार हो तो सुनो, महादेव जी ज़हर खाए बैठे हैं। सोना क्या, किसी वक्त आंख भी नहीं झपकती। महादेव जी के खिलाफ बिशन जी लक्ष्मी जी पर फ़रिफ़ता हो कर हमेशा ख़्वाबे आराम में ही मस्त रहते हैं। जब देखिए, आंखें बंद। इससे यह मालूम हुआ कि लक्ष्मी ज़हर है न कि ज़हर-ए-हलाहल। यानि दौलत वह सिमे कातिल है जो कि इंसान की आंखें बंद कर देता है। उसी की फ़िक्र में आदमी अंधा हो जाता है। नेक व बद सुझाई नहीं देता। अच्छे बुरे की तमीज़ बाकी नहीं रहती।

जब दौलत फ़साद की जड़ है तो मैं क्योंकर यकीन करूँ कि मेरी सलतनत के लिए भी कोई फ़साद नहीं सर उठाएगा।

राम : मैं इस मामले में हद दर्जा मोहतात रहूँगा अब्बा हुजूर। आप जानते हैं कि मुझे तख़्त व ताज का कोई लालच नहीं है। अगर आपका हुक्म न होता तो मैं इस तरफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखता।

दशरथ : लेकिन तुम्हारे अलावह इस तख्ते शाही के लिए मुझे तुम्हारे तीनों भाईयों शत्रुघन, भरत और लक्ष्मण में कोई काबिल भी तो दिखाई नहीं देता।

(राम चंद्र जी कोई जवाब नहीं देते।)

दशरथ : मेरा दिल भरत की तरफ खटकता है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि उसके नानिहाल से आने से पहले ही तुम्हारी ताजपोशी की रस्म पूरी हो जाए तो बहुत अच्छा रहेगा।

राम : (हैरत से वालिद की तरफ देखते हुए) भरत तो मुझे अपनी जान से ज्यादा अजीज रखता है अब्बा। वह क्योंकि मेरी मुख़ालफ़त करेगा ?

दशरथ : तुम लाख समझदार हो , अक़लमंद हो, मगर फिर भी दुनियादारी के मामले में बच्चा ही कहूंगा।बेटा ! तुम नहीं जानते कि दौलत व हुकूमत का लालच इंसान से क्या क्या नहीं कराती। उसके लिए बेटा बाप का और बाप बेटे का दुश्मन बन जाता है। भाई भाई में उसके लिए जंग होते हुए मैं ने देखा है। फिर दोस्ती की बात ही क्या।बेशक भरत अक़लमंद व नेक है। मगर तुम तो जानते हो कि इंसान की तबीयत हमेशा एक सी नहीं रहती। दिल पर काबू रख पाना कई बार बहुत मुश्किल हो जाता है।मुमकिन है कि भरत की तबीयत बदल जाए और हुकूमत पर अपना दावा पेश कर बैठे।अच्छा। अब तुम जाओ। ईश्वर की इबादत में अपना वक्त गुज़ार कर कल सुबह के होने का इंतज़ार करो।

(राम चंद्र पर अपने वालिद की बातों का काफी गहरा असर होता है। बहुत देर तक वह खड़े सोचते रह जाते हैं।)

(इतने में उनकी वालिदा कौशल्या और बेगम सीता अंदर दाखिल होती हैं।)

कौशल्या : (खुशी भरे लहजे में) मैं भी तो जानूँ कि बाप और बेटे में इतनी देर तक राज़दारी में क्या क्या बातें हो रही हैं ? मुझ से आखिर क्या क्या छुपाया जा रहा है।

(राम चंद्र जी मां को देख कर खुश हो जाते हैं। उनके चेहरे का तनाव थोड़ी देर के लिए कम हो जाता है। बेगम का चेहरा खुश है। वह उन्हें देख कर मुस्कुराती है।)

दशरथ : दुआ करो कौशल्या कि कल सुबह ताजपोशी की रस्म बहुस्न व खूबी अंजाम पा जाए।

कौशल्या : भगवान ने चाहा तो सब कुछ ठीक ही रहेगा। मैं वाकई कितनी खुशनसीब हूं कि मुझे रामचंद्र जैसा होनहार बेटा मिला। मेरी सी तकदीर दुनिया में किसी और की कहां। ऐसा आफ़ताब मेरी आंखों का नूर बना।(फिर जज़्बाती अंदाज़ में) मैं ने औलाद की उम्मीद में एक मुद्दत तक बिशन जी की तपस्या व इबादत की। शुक्र है कि मेरी मेहनत कामयाब हुई। और मेरे कलेजे को ठंडक नसीब हुई।जाओ बेटा, इस रात को भगवान के शुक़राने के तौर पर अपनी बेगम के साथ इबादत व रियाज़त में गुज़ारो। जाओ।

(राम चंद्र मां की बात पर मुस्कुराते हैं। अपनी बेगम की तरफ देखते हैं। प्यार से उसका हाथ थामते हैं और फिर बाहर निकल जाते हैं।

राजा दशरथ और मां कौशल्या उनको प्यार भरी नज़रों से देखते रहते हैं।)

कौशल्या : ईश्वर की महेरबानी रही तो मेरा बेटा मुद्दतों तक अयोध्या पर राज करेगा। हां। आप देख लीजिएगा, ऐसा राजा किसी ने इससे क़बल कभी न देखा है और न देखा होगा।

(राजा दशरथ कोई जवाब नहीं देते। अब भी उन पर एक अंजाना सा ख़ौफ़ सवार दिखाई देता है।)

कौशल्या : आप कुछ बोल क्यों नहीं रहे ?आपके चेहरे पर खुशी के आसार भी नहीं हैं। क्या बात है ?

दशरथ : (गहरी सांस ले कर) कुछ नहीं। बस ऐसे ही। अच्छा चलो। हम भी अपना वक़्त भगवान की इबादत में गुज़ारें।

(दोनों आगे बढ़ते हैं।)

अंधेरा

गीत :

(नोट : यहां पर अयोध्या के लोगों में राम चंद्र जी की ताजपोशी को ले कर जो दिली खुशी है, उसका इज़हार किया जाएगा।)

यह प्यारी अंजुमन हम को मुबारक

यह उलफ़त का चमन हम को मुबारक

वतन को हम, वतन हम को मुबारक

यहां की ख़ाक हम को कीमिया है

यह सोने से भी कीमत में सवा है

वतन को हम, वतन हम को मुबारक

जो चीड़िया सुबह को गाती है अक्सर

उसी का राग है उनकी जुबां पर

वतन को हम, वतन हम को मुबारक

वह एक मस्ती का आलम बादलों में

वह फूलों का महकना जंगलों में

वतन को हम, वतन हम को मुबारक (शायर : ब्रज नारायण चकबस्त)

सीन न. 5

मक़ाम : कैकई का महल

(साज़ व आवाज़ व मौसीकी के मोतरन्नुम धुन अभी भी सुनाई दे रहे हैं। वह अपने आप से कहती है।)

मंथरा : यह साज़ व आवाज़ व मौसीकी की आवाज़ सुन कर मैं पक सी गई हूं। और तो और, महारानी कौशल्या भी दोनों हाथ खोल कर ख़ज़ाने लुटा रही हैं। कपड़े बंट रहे हैं।..... अयोध्या के लोग भी खुशी से पागल हो रहे हैं। हर तरफ़ रक्स व सुरूर की महफ़िल सजाई गई है। राम चंद्र जी और उनकी नई नवेली बेगम को भी न जाने क्या हो गया है। वेद पढ़वा पढ़वा कर ब्रह्मणों का मुंह थकाए डालते हैं। कुछ समझ में नहीं आ रहा कि आख़िर मामला क्या है ?

(इतने में धात्री आती है। वह पूछती है।)

धात्री : तुम ने मुझे बुलाया मंथरा बहन ?

मंथरा : अरे। तुम आ गई ? मैं तुम्हारा ही इंतज़ार कर रही थी। पता नहीं अयोध्या के लोगों को क्या हो गया है ? यह हर ओर रक्स व सुरूर की महफ़िल क्यों सजाई गई है। इस तरह पूरे शहर में चेरागां क्यों किया गया है। समझ में नहीं आ रहा है कि माजरा क्या है। ज़ेब-व-आराइश से पूराशहर चौथी की दुल्हन मालूम हो रहा है। इंसान ही शराब व सुरूर से मस्त नहीं, बल्कि चरिंद व परिंद तक के दांत निकले पड़े हैं। बांछें खिली जाती हैं।

धात्री : अरे। मंथरा। कैसी भोली है रे तू ? तुझे क्या पता नहीं है कि कल श्री राम चंद्र जी का राज तिलक होने वाला है ? महारानी कैकयी कहां हैं ? उन्हें नहीं देख रही हूं। अरे। वह तो गहरी नींद सो रही हैं जैसे उन्हें किसी चीज़ की ख़बर ही नहीं।

(कैकयी आराम से पलंग पर सोई है।)

धात्री : अच्छा। मैं चलती हूँ। चाहो तो तुम भी रक्स-व-सुरुर की महफिल में शामिल हो सकती हो। अयोध्या के सारे बड़े-बड़े फ़नकार अपने फ़न का मुज़ाहिरा करने के लिए महल में जमा हुए हैं। ऐसा मौका फिर कभी नसीब न होगा।

(धात्री यह कह कर चली जाती है। मंथरा को झटका सा लगता है।)

मंथरा : (अपने आप से) तो क्या राम चंद्र जी का सचमुच राज तिलक होने वाला है ?
.. क्या इसी वजह से बड़ी चालाकी से महारानी कैकयी और राजकुमार भरत को इस बात की भनक तक नहीं लगने दी गई है? राजकुमार भरत और शत्रुघ्न को तो यहां से कोसों दूर उनके नानिहाल भेज दिया गया। अगर यह सच है तो महाराज दशरथ ने यह अच्छा नहीं किया। वाकई अच्छा नहीं किया।

(मंथरा बिना वक्त ज़ाया किए उनके पास पहुंच कर उन्हें थोड़ी झिझक के साथ जगाती है। कैकयी गहरी नींद में है। उसे इस तरह परेशान किया जाना अच्छा नहीं लगता। कुछ नारज़गी भरे अंदाज़ में कहती है।)

कैकयी : अरे। तू कुछ होश में तो है मंथरा। अच्छी भली नींद ख़राब कर दी। बोल, क्या बात है ?

मंथरा : आप को कुछ ख़बर भी है महारानी साहिबा ?

कैकयी : (हल्की मुस्कुराहट के साथ) ऐ नोज ! मुझे क्या पता ? अब बताओगी भी कि मामला क्या है ?

मंथरा : माफ कीजिएगा रानी साहिबा। सचमुच आपसे ज़्यादा नादान और भोली मैं ने इस दुनिया में नहीं देखा।

कैकयी : क्या बक रही है ! तुम्हें कुछ होश तो है मंथरा ?

मंथरा : किस पागल को होश आएगा महारानी साहिबा ? अगर ऐसी मुसीबत आन पड़ी हो तो !

कैकयी : क्यों पहेलियां बुझा रही है। साफ साफ बता कि माजरा क्या है ?

(वह एक आदमकद आईने के सामने बैठ कर अपने बालों में कंघा करने लगती हैं।)

मंथरा : आपको वाकई सफेद व सियाह से कुछ मतलब नहीं है रानी साहिबा। मगर यह समझिए कि हम सब पर मुसीबत का पहाड़ टूटने वाला है।

कैकयी : (गुस्से से) तेरी मिट्टी पलीद हो। क्या अनाप-शनाप बके जा रही है मंथरा ?

मंथरा : सच कहा है किसी ने कि जब किस को नेक व बद सुझाई ही न दे तो फिर उसका कुछ नहीं किया जा सकता।

कैकयी : ओ मंथरा ! कहीं कुछ पी वी कर तो नहीं आ गई ? तुम्हारा देमाग तो नहीं बहक गया ?

मंथरा : मैं बिल्कुल होश व हवास में हूं रानी साहिबा। सुना है कि महाराज दशरथ कल सुबह ही अपने बड़े बेटे, गोश-ए-जिगर, श्री राम चंद्र को ताज व तख्ता सौंपने जा रहे हैं। उनके राज तिलक की सारी तैयारियां मुकम्मल हो गई हैं।

कैकयी : (खुशी और हैरत के मिले जुले जज़्बात के साथ) सचमुच ! क्या ऐसा ही है ? मुझे तो किसी बात की ख़बर ही नहीं है।

मंथरा : शास्त्रों में ठीक ही लिखा है महारानी साबिहा। जो शख्स मीठी-मीठी बातें करता है, और अच्छी सूरत बनाए रहता है, तो वह ज़रूर कपटी और छली होगा। चुनांचे यही हालत हमारे महाराज दशरथ जी की है। वह बातों में आपको लुभा कर अपना मतलब गांठ रहे हैं। आपके हरदिल अजीज़ बेटे, जिगर गोशे भरत को उसके नाना नानी के पास भेज दिया। और खुद अपने बड़े बेटे राम चंद्र की ताजपोशी की खुफ़िया तैयारी करने लगे ताकि किसी तरह की रुकावट न आए। और हैरत की बात तो यह है कि इतना बड़ा जश्न और फिर हमारे भरत को कुछ ख़ैर ख़बर ही नहीं। वह अब भी अपने नाना नानी के पास खेल कूद में मसरूफ़ हैं। और यहां राम को राज सिंहासन पर बिठाने की सारी तैयारियां भी मुकम्मल कर ली गईं।

.....मुझे तो आपके भोलेपन पर सचमुच बहुत तरस आता है रानी साहिबा। बहुत तरस आता है।

(कैकयी इस बात पर ज़ोर से हंस पड़ती हैं। जैसे कि उन्हें इन बातों का कुछ असर ही नहीं हुआ। वह अपना एक ज़ेवर गले से निकालती है और मंथरा को देते हुए कहती है।)

कैकयी : ले। खुशखबरी का सिला। राम चंद्र जी के राज तिलक का इनाम। और भी अगर किसी चीज़ की ख्वाहिश हो तो बिला तकल्लुफ़ मांग सकती है। मेरे नज़दीक जैसे भरत वैसे ही राम। जैसे राम वैसे ही भरत। मैं उन दोनों में कोई फर्क नहीं करती। राम को राज-पाट मिला तो समझो कि भरत को भी मिल गया। बात एक ही है। बल्कि मैं राम ही के राज तिलक से खुश हूँ।(अपनी जगह से उठ कर आगे बढ़ते हुए कहती है।) कुछ और पाने की ख्वाहिश हो तो बोलो ? आज तुम जो मांगोगी वह मैं तुम्हें दूंगी।

मंथरा : ज़ेवर व पैसे आप ही को मुबारक हो रानी साहिबा। मैं कोई इतनी लालची नहीं हूँ। इन आंखों ने ऐसे बहुतेरे दिन देखे हैं और आपका दिया मेरे पास बहुत कुछ है।

कैकयी : मंथरा ! मैं महाराज की अकेली महारानी नहीं हूँ। आखिर सुमित्रा भी तो है। उसको भी ईश्वर ने दो बेटे दिए। वह क्यों उनके राज पाट की फिक्र नहीं करती ? और माना कि वह कुछ करे भी तो मुझे दुनिया जहान से कोई मतलब नहीं है।

मंथरा : सुमित्रा और आपकी हालत में ज़मीन व आसमान का फर्क है महारानी साहिबा। राम चंद्र को राज मिलने से उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा। नुक़सान सिर्फ़ आपका होगा। ग़रीब भरत का कहीं कोई ठिकाना नहीं रहेगा। और अगर यह कहिएगा कि जैसे भरत वैसे ही शत्रुघन, तो फिर तो भरत को अकेले नुक़सान उठाने का क्या डर। हैं ?सुनिए, कौन नहीं जानता। राम और लक्ष्मण में दांत काटी रोटी का रिश्ता है। राम जो राह चलें उसी पर लक्ष्मण चलने को हर वक्त तैयार। और ऐसे में तो लक्ष्मण की पांचों उंगलियां घी में हैं। शत्रुघन लक्ष्मण के सगे भाई हैं। इस वजह से उनका खेत कौन खा सकता है। सारी उलझन तो भरत जी के लिए है जिनसे महाराज की मुहब्बत का यह हाल है कि उन्हें बड़ी चालाकी और ख़ामोशी से उनके नानिहाल टरका दिया।और किस की मुहब्बत की बात करती हैं आप रानी

साहिबा। एक बार राम चंद्र को राज पाट मिलने दीजिए, फिर देखिए, क्या क्या मंज़र पेश आता है। मैं उनकी तबीयत से ख़ूब वाकिफ़ हूँ। भरत की वह दुर्दशा करेंगे कि दुनिया देखेगी। हाँ।

(मंथरा की इस लंबी तक्रिर का कैकयी पर काफ़ी गहरा असर पड़ता है।)

मंथरा : राजकुमार भरत का तख़्त व ताज से महरूम रहना क्या ज़रा सी बात है रानी साहिबा ? जन्म जन्मांतर तक फिर उन्हें सिंहासन और मुकुट मिलना नसीब न होगा। कुछ मालूम है कि जिस बेटे को राज मिलता है, उसी की औलाद आगे चल कर ताज-व-नगीन का मालिक बनती है। दूसरे भाईयों को तिनका भी नहीं मिलता। यानि जिसका ताज उसी का राज। नाम के यह दोनों भाई होंगे। अभी तो बराबरी का दावा है। कल से ख़िदमतगारी का तमगा मिल जाएगा। झुक झुक कर आदाब बजा लाया करेंगे। हाँ।

कैकयी : क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि शास्त्रों की हिदायत के मुताबिक़ बड़े बेटे को ही तख़्त-व-ताज का मालिक बनाया जाना चाहिए ?

मंथरा : पर अगर छोटा बेटा इस लायक़ हो कि वह ओहदा बख़ूबी संभाल सके तो राज-काज उसी को दिया जाना चाहिए। जहाँ तक मेरा ख़याल है, हमारे भरत जी हर तरह से हाशियार व बासलाहियत हैं। वह राम चंद्र से कहीं अच्छे राजा साबित होंगे। मुझे तो लगता है कि आप भी अपने बेटे की असली सलाहियतों से वाकिफ़ नहीं हैं।और तो और, बेटे को राज-पाट मिलते ही महारानी कौशल्या का बस राज पाट हो जाएगा। महल में सिर्फ़ उनका ही हुक्म चला करेगा। वह सारी अगली पिछली कसर निकाल कर आपको नाकों चने चबवाने पर मजबूर कर देंगी। कोई फिर कौड़ी को आपको न पूछेगा।और तो और, क्या आपको यकीन है राम चंद्र भरत को जीता जागता छोड़ देंगे ? भाईयों भाईयों का हसद व इर्ष्या तो सौतों की डाह से ज़्यादा ख़तरनाक होता है। राज पा कर जो भाई जान बख़्शे तो समझ लीजिए कि सूरज पूरब से निकलने के बजाए पच्छिम से निकल आया। आखिर आप कैसी माँ हैं जिन्हें अपने बेटे के मुसतक़बिल की ज़रा भी परवाह नहीं !

कैकयी : (गुस्से से) अपनी फुजूल बकवास बंद कर वर्ना अभी तुम्हें कैदखाने में डलवा दूंगी। क्या मैं राम चंद्र को नहीं जानती। ऐसे नेक और अकलमंद इंसान के बारे में ऐसी बदगुमानी और बुरा खयाल। उनको अब तक मैं ने हर तरह के धर्म का पाबंद पाया है। वसिष्ठ जी जैसे गुरु की सोहबत में रह कर उन्होंने तालीम हासिल की है। फिर राम चंद्र से बढ़ कर इस दुनिया में कौन है जिसे धर्मात्माओं का सरदार समझा जाए ? और तो और, मैं ने इन दोनों भाईयों में कभी एक दूसरे के लिए कोई अदावत व दुशमनी की बात नहीं देखी। दोनों न सिर्फ एक दूसरे से बेइंतहा प्यार करते हैं बल्कि एक दूसरे की बला की इज्जत भी करते हैं।

मंथरा : मैं ने समझ लिया कि आपको राजकुमार भरत के मुसकबिल की कोई फिक्र नहीं है। आप भरत को राम चंद्र का गुलाम बनाना चाहती हैं। लेकिन मुझ से ऐसा होते हुए कभी देखा न जाएगा। उस दिन के आने से पहले ही मैं अपना प्राण त्याग देना पसंद करूंगी, मगर अपने प्यारे राजकुमार के लिए जिल्लत व रुसवाई की जिंदगी देखना पसंद नहीं करूंगी।

(कैकयी सोच में पड़ जाती है। और मंथरा की बातों का उस पर ख़ासा असर होता दिखाई देता है। वह अपनी जगह से आगे बढ़ कर कमरे का चक्कर लगाते हुए कहती अपने आप से कहती है।)

कैकयी : मंथरा ने भी ज़माना देखा है। धूप में बाल सफ़ेद नहीं किए हैं इसने। जो कह रही है मेरे और भरत के भले के लिए ही कह रही है। इसमें उसकी आखिर जाती गर्ज ही क्या है। अगर भरत के हाथ से एक बार राज गद्दी निकल गई तो यह सच है कि फिर उसकी आने वाली नस्लों तक राजा बनना नसीब न होगा। मंथरा ठीक कहती है। राजा का बेटा ही राजा बनता है।

(वह अपनी जगह रुक कर यकायक आंखों में एक अजीब सी चमक के साथ कहती है।)

कैकयी : मंथरा ! तू सच कहती है। अब मेरी समझ में आया कि राम चंद्र के तिलक से क्या क्या नुक़सान होने वाला है।तू इत्मीनान रख। अब राज सिंहासन पर राम चंद्र की जगह भरत ही बैठेगा। मेरा बेटा भरत ही राजा होगा।

(मंथरा की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। वह भाग कर उसके पास जाती है। और अपनी खुशी का इज़हार करते हुए कहती है।)

मंथरा : मगर यह राह इतनी आसान न होगी महारानी साहिबा !

कैकयी : तेरी निगाह में कौन सी कारगर तदबीर हो सकती है जिससे हम अपने मक़सद को हासिल कर सकेंगे ?

मंथरा : शुक्र है भगवान का। आपकी सोच तो बदली। वर्ना मैं तो सोच सोच कर पागल हुई जा रही थी कि मेरी आंखों के सामने यह क्या हो रहा है। मैं ने राजकुमार भरत को इन हाथों में खेलाया और झूला झुलाया है। भगवान मुझ से झूठ न बुलवाए। मैं ने हमेशा उनको ख़्वाब में राज सिंहासन पर बैठे देखा है। मेरा सपना ग़लत नहीं हो सकता। हां। ग़लत नहीं हो सकता।

कैकयी : मगर मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि राजा दशरथ जी के पास जा कर क्या कहूंगी और उन्हें किस तरह तैयार करूंगी कि वह राम चंद्र को राज पाट का इरादा तर्क कर के भरत को उसकी जगह राज पाट देने का अमल शुरू करें। यह काम इतना आसान तो न होगा ?

मंथरा : बहुत आसान है। बहुत आसान है रानी साहिबा। भगवान झूठ न बुलवाए। एक बार राक्षसों के साथ एक बहुत ही खूबेज़ जंग हुई थी। जिसमें राजा दशरथ मरते-मरते बचे थे और आपने अपनी जान पर खेल कर बड़ी बहादुरी से दुशमनों से मुक़ाबला कर के उनको मौत के मुंह से निकाला था। उस वक़्त राजा दशरथ जी ने आपसे खुशी से दो वरदान मांगने के लिए कहा था। याद है आपको ?

(कैकयी इस बात को याद कर के बहुत खुश होती है। जैसे सारा मंज़र उसकी आंखों के सामने घूम गया हो।)

कैकयी : हां, याद है। मुझे पूरी तरह याद है। वह बहुत भयानक जंग थी। और महाराज दशरथ लगभग वह जंग हार चुके थे। मगर हम ने अपनी पूरी कोशिश और हिम्मत से उस जंग का रुख बदल दिया था। और हमें बिलआखिर सुरखुरुई और कामयाबी नसीब हुई थी।

मंथरा : ईश्वर की मेहरबानी से अब वह दोनों वरदान मांगने का वक्त आ गया है महारानी साहिबा। वक्त आ गया है। आप महाराज से अभी उनका किया हुआ वादा याद दिलाएं।

कैकयी : ठीक है। मैं उन्हें याद दिलाऊंगी। ज़रूर याद दिलाऊंगी।

मंथरा : उन से कहिएगा कि महाराज राम चंद्र को वनवास दें और भरत को राज गद्दी पर बिठाएं। चौदह बरस बाद फिर उन्हें अख्तियार होगा, वह जो चाहें फैसला करें।

कैकयी : ठीक है। मैं ऐसा ही करूंगी मंथरा। मैं उनसे ठीक ऐसा ही कहूंगी।

मंथरा : खूब याद रहे कि महाराज आपको लालच देंगे। आपसे विनती करेंगे। रामचंद्र की सौगंध खाएंगे। मगर उनकी एक न सुनना महारानी साहिबा।

कैकयी : ठीक है। तुम जाओ। महाराज के आने का वक्त भी हो रहा है। मुझे उनके लिए अपने आपको तैयार भी करना है।

मंथरा : (अपने आप से कहते हुए वहां से जाने लगती है।) हाय मारा डाला। कहीं का न रखा। भरत के होते हुए राम को राज। महारानी कैकयी के होते हुए महारानी कौशल्या की इज्जतअफ़जाई ! अरी मंथरा ! तू लुट गई। बर्बाद हो गई।

(मंथरा चली जाती है। कैकयी पर सन्नाटा छा जाता है। उसे समझ में नहीं आ रहा कि वह आगे क्या करे और कौन सा रुख अख्तियार करे।)

कैकयी : (अपने आप से कहते हुए) हे भगवान ! मैं क्या करूं ? मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। क्या मंथरा सही कह रही है कि राम चंद्र को राज मिल जाने से हमारी गुलामी के दिन शुरू हो जाएंगे ?

(धीरे धीरे स्टेज पर अंधेरा छा जाता है।)

गीत :

थी फ़िक्र कैकयी को सदका उतार दे
चाहा कि मंथरा को जवाहर का हार दे

बदला हुआ था आज मगर मंथरा का रंग
खुलता था बात बात में मक्खो रिया का रंग

जमने लगा फ़रेब से हिस्रो हवा का रंग
उड़ता था अब गुबार की सूरत वफ़ा का रंग

बोली तुनक के हार अलामत है हार की
तक़दीर सो गई भरत नामदार की

धोना पड़ेंगे हाथ उन्हें तख़्तो ताज से
बन कर फ़कीर भीख सी मांगेंगे राज से

दोज़ख़ भरेगा पेट किसके अनाज से
रानी नहीं हो तुम भी, बांदी हो आज से(शायर : जगेश्वर नाथ बेताब बरेलवी)

सीन न. 6

मकाम : कैकयी का कमरा

(कैकयी अपने बिस्तर पर ग़मज़दह सी लेटी है। उसने अपना साज सिंगार भी उतार दिया है। ऐसा लग रहा है जैसे कि उस पर कोई बड़ी मुसीबत आन पड़ी हो।)

(इतने में राजा दशरथ तशरीफ लाते हैं। वह काफी खुश दिखाई दे रहे हैं। उन्हें यहां के हालात का कुछ भी इल्म नहीं है। वह पास आते हैं मगर बेगम का चेहरा उतरा हुआ देख कर हैरान रह जाते हैं। कुछ पल तक समझ में नहीं आता कि मामला क्या है।)

राजा दशरथ : क्या बात है ? मेरी प्यारी बेगम का चेहरा क्यों उतरा हुआ है जबकि हर सू महल में खुशियों के शादियाने बजाए जा रहे हैं ?

(कैकयी अब भी ख़ामोश रहती है। राजा दसरथ को तश्वीश होती है।)

दसरथ : आख़िर नाराज़गी की वजह तो मालूम हो। क्या बंदे से कोई गुस्ताख़ी हुई है ?

कैकयी : (एक तवील ख़ामोशी के बाद) आपको कुछ कहने से वैसे भी क्या हासिल। आप तो वही करेंगे जो आपका दिल चाहेगा।

दशरथ : क्या कभी मैं ने तुम्हारी किसी ख़्वाहिश का गला घोंटा है महारानी कैकयी ? जहां तक मुमकिन हो सका, मैं ने उसे पूरा करने की कोशिश की है।वैसे तुम भी जानती हो कि इस दुनिया में तुम्हारे और राम चंद्र से बढ़ कर कोई तीसरा मेरे लिए जान से प्यारा नहीं है। आख़िर बताओ तो सही कि मामला क्या है ?

कैकयी : मुझे याद है कि आपने मुझ से बरसों पहले एक वादा किया था ?

दशरथ : (चौंक कर) वादा !

कैकयी : उस वादा का सिर्फ मैं गवाह नहीं हूं बल्कि चांद, सूरज और सितारे सब गवाह हैं। याद कीजिए महाराज। जब समरना राक्षस के साथ आपकी जंग हुई थी और आप मौत के मुंह

से बड़ी मुश्किल से बच पाए थे। तो उस वक्त मैं ने किस तरह अपनी जान पर खेल कर आपकी जान बचाई थी। और आपने उस एहसान के बदले मुझ से मेरी दो मांगों का पूरा करने का वचन दिया था। याद है ?

दशरथ : (ज़ेहन पर ज़ोर डालते हुए) हां, याद है। याद है। ख़ूब अच्छी तरह याद है। भला उस घड़ी को कौन भूल सकता है। और तुम्हारे एहसानात को भी महारानी कैकयी।

कैकयी : तो वादा कीजिए कि अगर मैं वह दोनों मांगें आज मांगूंगी तो आप उसे बख़ुशी पूरा करेंगे ?

दशरथ : (सोच में पड़ जाते हैं। फिर गहरी सांस ले कर) मैं ने हमेशा दूसरों से किया हुआ वादा पूरी ईमांदारी से निभाया है। आप अपनी बात रखिए।

कैकयी : (कुछ पल की खामोशी के बाद) मेरी ख़्वाहिश है कि राम चंद्र चौदह बरस की सैर करें और मेरे बेटे भरत को राज गद्दी सौंपी जाए। जिस शान व शौकत से आप राम चंद्र को राज सिंहासन पर बिठाना चाहते हैं, उसी धूम धाम से भरत को राज गद्दी सौंप दीजिए। और राम चंद्र को वनवास का हुक्म सादिर कीजिए।

(राजा दशरथ का चेहरा इस बात को सुन कर फ़क पड़ जाता है। उन्हें समझ में नहीं आता कि यह क्या हो रहा है।)

दशरथ : दूसरी मांग फिर भी दिल पर पत्थर रख कर क़बूल कर सकता हूँ, मगर पहली कोकैसे क़बूल कर सकता हूँ ! भरत शौक से राज गद्दी की ज़िम्मेदारी संभाल लें, मगर राम चंद्र को वनवास पर भेजने का ख़याल भी दिल में कैसे ला सकता हूँ। अपने जिगर गोशे को अपनी नज़रों से कैसे दूर कर सकता हूँ ?

कैकयी : मुझे मालूम थ कि आप अपने वादे को कभी पूरा नहीं कर पाएंगे। यह क्या बात हुई ! आपने कहा था कि जो भी मांगूंगी वह मैं दूंगा। मगर यहां तो आप शर्त तय करने लगे हैं।

दशरथ : मेरे बुढ़ापे का कुछ तो खयाल करो महारानी कैकयी। तुम जानते हो कि मेरे सारे बेटों में राम से मुझे कितना दिली लगाव है। ऐसा भी नहीं है कि मैं अपने दूसरे बेटों से मुहब्बत नहीं करता हूँ। बल्कि उतना ही करता हूँ। मगर राम चंद्र से न जाने मुझे क्यों बेहद जज़्बाती लगाव है जिसका तजज़ीया मैं भी नहीं कर सकता। बस मजबूर महज़ हूँ।

कैकयी : मगर मेरी दोनों मांगें तो यही हैं। अब पूरा करना न करना आपकी मर्ज़ी और इरादे पर मुनहसर करता है।

दशरथ : मेरे बुढ़ापे का भी तो कुछ खयाल कीजिए महारानी। वैसे भी कभी मैं ने आपका दिल नहीं दुखाया है। वाकई मैं आज क़ाबिले रहम हूँ। मुझ से नर्मि और रहमदिली का मामला कीजिए। मैं जिंदगी भर आपका एहसानमंद रहूंगा।

कैकयी : (सख़्त अंदाज़ अपनाते हुए) ऐ राजा दशरथ ! आप क्या यूँ ही खुद को बुजुर्गों की औलाद कहते हैं ? हाय ! कहां आपके आबा-ओ-अजदाद राजा सुगर जिनके साठ हज़ार बेटों ने ज़मीन खोद कर समुंदर बहा दिए। राजा भागीरथ गंगा को आसमान से उतार लाए। क्या धर्म इसी का नाम है ? क्या जुबान खोने और वादा का लिहाज़ न रखने से धर्म रह जाता है ?

दशरथ : मैं ने जिंदगी में उस वक़्त बड़ी ग़लती की थी जो मैं ने तुम्हारी दो मांगों को पूरा करने का वादा किया था। ऐ काश ! कि यह सब कुछ हुआ ही न होता। मैं उसी वक़्त मर कर भूला बिसरा हो गया होतातो आज मुझे यह दिन तो न देखना पड़ता। आख़िर दुनिया क्या कहेगी ? राम चंद्र को राज गद्दी सौंपने की पूरी तैयारी मुकम्मल हो गई है। चारों तरफ़ दावतनामे बांटे जा चुके हैं। हज़ारों लोग इस तक्रीब में हिस्सा लेने के लिए अयोध्या पहुंच चुके हैं। और हज़ारों कल सुबह तक पहुंच जाएंगे। आख़िर उन लोगों को जब यह पता चलेगा राम की जगह भरत गद्दी संभालेंगे तो मेरी क्या इज़्ज़त रह जाएगी। और तो और, इस हुक्म को सुन कर उन पर क्या बीतेगी कि ऐसे अज़ीज़ बेटे को राज गद्दी से तो मैं ने महरूम किया ही , साथ ही साथ उसे महल छोड़ कर चौदह बरस के लिए जंगलों की खाक छानने

का हुक्म भी सुना दिया। हाय ! यह सब क्या सुन रहा हूँ। हाय ! यह सब क्या सुन रहा हूँ मैं !

कैकयी : मुझे मालूम था कि आप ऐसे ही हीले और बहाने बनाएंगे।

दशरथ : हाय ! तुम कैसी संगदिल हो गई हो कैकयी ? न मेरी जान की परवाह और न मेरे बुढ़ापे का खयाल। न कौशल्या की जिंदगी की फ़िक्र न लक्ष्मण और शत्रुघन पर पड़ने वाले असर का खयाल। आखिर दोनों भाईयों पर भी इस फैसले का कितना गहरा असर होगा।
... कैकयी ! आज तेरा दिल कैसा पत्थर का हो गया है ? जिस राम चंद्र के लिए सारी दुनिया आंखें बिछाती है, पलकें फर्श पर रखती हैं, जिनके लिए हर वक़्त एक सवार मौजूद रहता है। जिसको कभी मैं ने उसके बचपन में गोद से उतरने नहीं दिया। उसके वास्ते जंगल की जिंदगी गुज़ारने की तजवीज़ पेश करते हुए तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं आई ? वह नाजुक नाजुक पांव, फर्श गुल के लायक और कहां जंगल की खाक और कंटीली झाड़ियां !

ऐ कैकयी ! मैं ने जिंदगी के इतने बरस गुज़ारने के बाद आज समझा कि औरत कितनी बेमरव्वुत और संगदिल हो सकती है !

(कैकयी पर राजा दशरथ की फ़रियाद का कुछ असर होता दिखाई नहीं देता। उसके चेहरे पर और भी सख्ती नुमायां होती जाती है।)

दशरथ : मैं तुम्हें देवी समझता हूँ महारानी कैकयी। मेरे हाले-ज़ार पर रहम करो। मैं यह दुख सहने के लायक नहीं हूँ।

कैकयी : राम चंद्र अगर जंगल को न गए तो समझूंगी कि आपने अपना किया हुआ वादा पूरा नहीं किया। और मेरा बेटा भरत अगर कल राज सिंहासन पर न बैठा तो अयोध्या का एक घोंट पानी पीना भी मेरे लिए हराम होगा। हां।

(यह कहते हुए वह तेज़ी से वहां से चली जाती है। राजा दशरथ हैरान व परेशान खड़े रह जाते हैं।)(अंधेरा)

गीत :

अपना नहीं है पेट का जाया है सौत का

यह भी ख़बर है पूत पराया है सौत का

अपने को किसने दूध पिलाया है सौत का

होनी ने आज मान बढ़ाया है सौत का

चौदह बरस का राम जो वनवास पाएंगे

वासी अयोध्या के उन्हें भूल जाएंगे

आखिर भरत को हार के राजा बनाएंगे

कैसे रचाई जाती है महफ़िल दिखाएंगे

आएंगे दिन ज़रूर फिर अपनी बहार

नौ नक़द से बुरे नहीं तेरह उधार के

(शायर : जगेश्वर नाथ बेताब बरेलवी)

सीन न. 7

मक़ाम : श्री राम चंद्र जी का कमरा

(श्री राम चंद्र जी शहंशाही लिबास ज़ेबतन किए अपनी बेगम सीता के साथ तख़्त पर बैठे हैं। उन्हें इंतज़ार है कि कब उनके वालिद का बुलावा राज तिलक के लिए आता है। दोनों काफ़ी खुश दिखाई दे रहे हैं।)

राम : मुझे तो इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी उठाने के एहसास से ही ख़ौफ़ आ रहा है महारानी सीता।

सीता : (मुस्कुरा कर) वह क्यों ?

राम : (मुस्कुरा कर) क्या इतनी बड़ी हुकूमत के इंतज़ामी उमूर को अच्छी तरह संभालना आसान होगा ? मुझे राज पाट का तजुर्बा ही क्या है। राजकुमारों और शहज़ादों की तरह ज़िंदगी गुज़ारना और बात थी। और अब मंसबे हुकूमत पर बैठ कर हुकूमत चलाना बिल्कुल दूसरी बात है।

सीता : मुझे उम्मीद है कि आप अपनी रियाया और ग़रीब अवाम के लिए रहमदिल और नेक दिल शहंशाह साबित होंगे। अब तक मैं ने आपको सिर्फ़ भलाई की बात सोचते और नेक काम करते ही देखा है। उसके सिवा मैं आपसे और क्या उम्मीद कर सकती हूँ कि आप एक ग़रीब परवर और नेक दिल बादशाह साबित होंगे।

(इतने में दरवाज़े पर दस्तक होती है।)

सुमंत्र : क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ?

राम : कौन ? लगता है कि वालिद साहब की तरफ़ से राज तिलक के लिए बुलावा आ गया है।

सुमंत्र : गुस्ताख़ी के लिए माफ़ी का ख़्वास्तगार हूँ हुज़ूर।

१००

१००

१००

१००

१००

१००

१००

१००

१००

१००

१००

१००

१००

१००

राम : अरे। सुमंत्र ! आओ आओ। बैठो। कहो क्या ख़बर है ?

सुमंत्र : महाराज ! आज महारानी कौशल्या से बढ़ कर तीनों लोकों में कोई भी औरत इतनी खुशनसीब नहीं। न किसी ने आप जैसा नेक और लायक़ बेटा जना और न पाला पोसा।
..हमारे बड़े महाराज दशरथ जी महारानी कैकयी के महलसेरा में रौनक़ अफ़रोज़ हैं और वे दोनों आपको याद फ़रमाते हैं।

राम : (अपनी बेगम सीता की तरफ़ देख कर) देखा बेगम ! मैं ने कहा न था कि महाराज की तरफ़ से जल्द बुलावा आ जाएगा। लो, आ ही गया। महाराज का इस वक़्त मां कैकयी के पास होना ख़ास खुशी का इशारा है। वहां राज तिलक की बातें छिड़ी होंगी। और महारानी कैकयी चाहती होंगी कि इस वक़्त वह मुझे देख कर अपनी आंखें ठंडी करें। अगर ऐसी बात न होती तो फिर सुमंत्र को मुझे बुलाने के लिए भेजा न जाता। आओ, चलो सुमंत्र।

सुमंत्र : चलिए महाराज।

(सुमंत्र पहले निकल जाता है। सीता जी अब सोच में पड़ जाती हैं कि आख़िर मामला क्या है। वह अपने शौहर से कहती हैं।)

सीता : हिरण की सींग जो आपके हाथ में है वह आपको राज पाट दिलवाए। जब तक आप खुशी खुशी दोबारा मेरे पास लौट नहीं आते तब तक मुझे चैन हासिल न होगा।

राम : अरे। ऐसे घबराने और परेशान होने की कोई बात नहीं है। मां कैकयी और अब्बा हुजूर मुझे आख़िरी बार राज गद्दी पर बैठने से क़ब्ल अपनी कीमती दुआओं और मशिवरों से नवाज़ना चाहते होंगे। मैं यूं गया और यूं आया।

(वह अपनी बेगम की पेशानी पर प्यार से बोसा सब्त कर के बाहर निकल जाते हैं। मगर सीता जी के दिल धड़कनें कुछ अनहोनी के ख़ौफ़ से तेज़ हो जाती हैं। वह अपने आप से कहती हैं।)

सीता : हाय ! मेरा दिल क्यों इतनी तेज़ी से धड़क रहा है जैसे कि यह कोई जला देने वाली धूकनी हो।मुझे तो कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। हे भगवान। तू सब ठीक ठाक रखना। हमारे अरमानों की लाज रखना।

(वह दीवार के पास जाती हैं और देवी देवताओं की इबादत में मसरूफ़ हो जाती हैं।)

(अंधेरा)

सीन न. : 8

मक़ाम : महारानी कैकयी का कमरा

(महारानी कैकयी और महाराज दशरथ काफी ग़मज़दह और परेशान बैठे हैं। माहौल काफी तनाव भरा लग रहा है। राम चंद्र जी एक बार तो वहां का नज़ारा देख कर हैरान रह जाते हैं। उन्हें अपनी आंखों पर यकीन नहीं आता। फिर भी वह हिम्मत कर के पहले अपनी सौतेली मां के पास जा कर उनके पांव छूते हैं और उनसे आशीर्वाद लेते हैं। फिर जैसे ही वालिद के पास पहुंचते हैं तो उनकी आंखों से आंसू रवां हो जाते हैं। और वह फूट फूट कर बेअख़्तियार रोने लगते हैं। राम चंद्र काफी देर तक परेशान खड़े रहते हैं।)

राम : लगता है कि मुझ से कोई बड़ी ग़लती हो गई है। वर्ना मेरे आने पर ऐसी दम घुटने वाली ख़ामोशी यहां न होती। क्या बात है ? आप रो क्यों रहे हैं अब्बा हुज़ूर ?

(दोनों चुप रहते हैं।)

राम : (मां कैकयी का हाथ पकड़ कर) आज अब्बा इतने ख़ामोश क्यों हैं और उनकी आंखों से यह लगातार आंसू क्यों बह रहे हैं ? क्या यह खुशी का दिन नहीं है हम सब के लिए ? ...
.....कहीं इस अहम घड़ी में भरत और शत्रुघन की जुदाई का सदमा तो नहीं है आप लोगों को ?

कैकयी : बेटा। तुम फ़िक्रमंद न हो। और अपना दिल छोटा मत करो। इन्हें न कोई रोग है और न ही कोई बीमारी। बस एक छोटी सी बात है।

राम चंद्र : (चौंक कर) कौन सी बात ?

कैकयी : बरसों पहले इन्होंने मुझ से एक वादा किया था।

राम : (हैरत से देखते हुए) वादा ! कैसा वादा ?

कैकयी : इन्होंने अपनी जिंदगी के एक बेहद अहम और नाजुक मोड़ पर मुझ से यह वादा किया था वह मेरी किसी दो मुरादों को जब मैं चाहूंगी, उसे पूरी करेंगे।

राम : बेशक। अब्बा हुजूर ने जो जुबान दी है वह पत्थर की लकीर की तरह है। मगर यह तो फरमाईए कि आपकी वह दो मुरादें कौन सी हैं।

कैकयी : (खुश हो कर) शाबाश। बेटा। शाबाश। तुम्हारी उम्र लंबी हो। जिंदगी तुम्हारी सलामत रहे। औलाद हो तो वाकई ऐसी। बेटा हो तो तुम्हारे जैसा।

राम : आप अपना मुद्दआ बयान कीजिए। भगवान ने चाहा तो उन दोनों मुरादों को मैं ही पूरी कर दूंगा।

कैकयी : अच्छा। कहती हूं। मगर पहले यह कसम खाओ कि जो बात तुम्हारे अख्तियार में होगी उसे तुम जरूर बिल जरूर पूरा करोगे।

राम : (हल्की हंसी के साथ) मां बाप की खुशनूदी और खुशी के लिए इस छोटी सी बात की क्या अहमीयत। मैं अपनी जान भी देने के लिए तैयार हूं मां। आप बयान तो कीजिए।

कैकयी : मेरी दिली ख्वाहिश है बेटा कि राज सिंहासन और तख्त व ताज भरत को मिले और तुम चौदह बरस वनवास काटो। मेरे खयाल से राज पाट और हुकूमत चलाने की सलाहियत तुम्हारे मुकाबले भरत में कहीं ज्यादा है। उसकी अहदे हुकूमत में अयोध्या को रौनक और खूब तरक्की हासिल होगी।

राम : (हंस कर) बस इतनी सी बात है। इसके लिए आप दोनों इतना परेशान हो रहे हैं ! आप लोग इत्मीनान रखें। मैं आप लोगों का हर हुक्म मानने के लिए तैयार हूं।

(कैकयी इस बात को सुन कर बहुत खुश होती है।)

कैकयी : मुझे तो यकीन नहीं आता कि ऐसा हो जाएगा। मेरा बेटा भरत राज गद्दी संभालेगा। और राम वनवास जाएगा। मुझे तो वाकई यकीन नहीं आ रहा।

राम : मैं हमेशा यही चाहूंगा कि मेरे वालिद साहब का सर फ़ख़्र से मेरी वजह से ऊंचा रहे।
उनका मर्तबा और रूतबा बुलंद हो।

दशरथ : (बेहद दुख से) लेकिन ऐसा मैं ने कभी नहीं चाहा था बेटा। मगर किसमत को पता नहीं क्या मंजूर था।

राम : भरत और मुझ में फ़र्क ही क्या है अब्बा। तख़्त व ताज मुझे नहीं और अगर उसे ही मिला तो क्या फ़र्क पड़ता है।

दशरथ : मगर यह चौदह साल वनवास की शर्त तो सरासर जुल्म है बेटा। सरासर जुल्म है।

(कैकयी इस बात पर नाखुश होती है।)

राम : लेकिन अगर मां कैकयी के दोनों मांगें यही हैं तो यही सही। मैं इसे पूरी ख़ंदापेशानी से क़बूल करने के लिए तैयार हूँ। आप मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं अपने इस इम्तेहान में पूरा उत्तरूँ।

(वह अपने वालिद के क़दमों में झुक जाते हैं। और फिर उसका बोसा ले कर बड़े अदब से खड़े होते हुए कहते हैं।)

राम : आपका वादा पूरा हो गया अब्बा हुज़ूर। मैं चौदह बरस के बाद ही फिर इन क़दमों का दीदार करूंगा। आप सा खुशनसीब इस दुनिया में कौन होगा जिसकी प्रतिज्ञा में कभी कोई फ़र्क नहीं आया। मुझे यह भी खुशी है कि मां कैकयी ने आपके दोनों वादों को पूरा करने का मुझे मौक़ा इनायत किया।

(फिर वह मां कैकयी के पैर छूते हैं।)

कैकयी : खुश रहो बेटा। हमेशा खुश रहो। भगवान तुम्हें सलामत रखे।

(वह फिर एक बार और अपने पिता राजा दशरथ के पैर छूते हैं। उनके लिए अपने जज़्बात पर काबू रख पाना मुश्किल हो जाता है। वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगते हैं। कैकयी के चेहरे पर जीत की मुस्कुराहट फैल जाती है।) (अंधेरा)

सीन न. : 9

मक़ाम : महारानी कौशल्या का कमरा

(महारानी बेहद खुश बैठी हैं और देवी देवताओं की मूर्तियों के सामने बैठ कर मंत्रों का जाप कर रही हैं। उनके सामने कुछ ब्राहमण बैठे वेद पाठ कर रहे हैं और दुआएं दे रहे हैं।)

ब्राहमण : महाराज श्री राम चंद्र जी की जय हो। श्री रामचंद्र जी की जय हो। उनकी उम्र दराज़ हो। उनका अखंड राज सातों लोकों में कायम व दायम रहे। सूरज धरती पर रौशनी की बारिश करे। उनके आगे किसी दुश्मन को खड़ा होने की ताक़त न रहे।

(महारानी कौशल्या यह सब सुन बेहद खुश हो रही हैं। और उन्हें इनआमात से नवाज़ रही हैं।)

(इतने में राम चंद्र जी तशरीफ़ लाते हैं। सब उनकी जय जयकार करने लगते हैं।)

ब्राहमण : महाराज राम चंद्र की जय हो। महाराज रामचंद्र जी की जय हो। हमेशा के लिए इनका इक़बाल बुलंद हो।

(महारानी कौशल्या मुहब्बत से अपनी जगह से उठ कर उन्हें गले लगाने के लिए बेताबी से आगे बढ़ती हैं।)

कौशल्या : कितनी देर से मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी। क्या कर रहे थे अपने अब्बा के पास इतनी देर तक ?

राम चंद्र : (मुस्कुरा कर) कुछ काम की बातें हो रही थीं मां।

कौशल्या : मेरी दुआ है कि तुम्हारा इक़बाल इसी तरह बुलंद रहे। तुम सब के फ़ख़ और सरताज कहलाओ। मैं भी कल से व्रत रखे हुई हूं। तुम ने भी कुछ नहीं खाया पीया। आओ। कुछ खा पी लो।

(ब्राह्मण इसी बीच वहां से जाने लगते हैं। और वे अदब से राम चंद्र का पांव आ कर छूते हैं और उनसे आशीर्वाद लेते हैं।)

(कुछ पल तक खामोशी रहती है। इसी बीच महारानी कौशल्या एक बर्तन में कुछ मिठाईयां और फल ले कर आती हैं और उनके सामने रख देती हैं। और प्यार भरी नज़रों से उन्हें देखने लगती हैं।)

कौशल्या : यह आसन बिछा है। बैठो। कुछ खा पी लो।

राम : मैं अब इस आसन पर बैठने के लायक नहीं हूं मां। मेरा आसान आज से मखमली गाव तकिया नहीं बल्कि जंगल है।

(महारानी कौशल्या हैरत से उनकी तरफ देखती रह जाती हैं। उन्हें कुछ समझ में नहीं आता कि मामला क्या है।)

राम : महाराज दशरथ जी ने आज मुझ पर बड़ा एहसान किया है।

कौशल्या : वह तो है। तुम उनके हरदिल अजीज़ बेटा जो हो।

राम : मां कैकयी का भी शुक्रिया किस जुबान से अदा करूं जिन्होंने मुझे एक खास हुक्म दे कर एक अनोखी खिदमत करने का मौका इनायत फ़रमाया है।

कौशल्या : मैं कुछ समझी नहीं। तुम क्यों मुझ से पहेलियां बुझा रहे हो राम। साफ साफ क्यों नहीं बताते कि बात क्या है। मेरा कलेजा धड़क रहा है।

राम : मां, शहरों का फैलाव कम होता है। इसलिए यहां के राज पाट चलाने की ज़िम्मेदारी भरत को दी जाती है और जंगलों में बहुत उसअत और फैलाव होता है, इसलिए मेरी बुजुर्गी और सलाहियत के लिहाज़ से मुझे वहां की बादशाहत अता की गई है।

(महारानी कौशल्या को इन बातों पर यकीन नहीं आता। उन पर एक बिजली सी गिरती है। उनके चेहरे पर हवाईयां सी उड़ने लगती हैं।)

राम : चूंकि यह बहुत नेक और शुभ घड़ी है और महरत भी उमदा है , इसलिए आपसे रूखसत मांगने के लिए हाज़िर हुआ हूं। इजाज़त दीजिए। आज से मेरे लिए महल का दाना-पानी हराम है। मेरी रोज़ी अब जंगल के कंद मूल और फल होंगे। और मैं पहाड़ों के झरने का पानी पीयूंगा। मेरी प्यास सिर्फ़ चौदह बरस का मामला है। आप इतने दिनों सब्र करें। फिर यही पांव फिर आप की कदमबोसी के लिए इस चौखट पर हाज़िर होंगे।

(वह मां के कदमों पर झुक जाते हैं। और उसे चूमते हैं। मां कौशल्या की आंखों में आंसू डबडबा जाते हैं।)

कौशल्या : भगवान। यह मैं क्या सुन रही हूं। क्या यह सच है मेरे प्यारे बेटे ? क्या यह सच है ?

(वह फूट फूट कर रोने लगती हैं।)

राम : मां, यह सच है। मगर मुझे उम्मीद है कि आप ख़ूब सब्र और हिम्मत से काम लेंगी।

(महारानी कौशल्या के लिए अब और कुछ सुनना मुश्किल हो जाता है। वह एक तवील ख़ामोशी के बाद ज़रा आवाज़ में सख़्ती के साथ कहती हूं।)

कौशल्या : मेरे प्यारे बेटे राम। मैं ने कभी तुम्हारे वालिद के हुक्म की उदूली नहीं की। हमेशा उनकी खुशी और आराम का ख़याल रखा। मगर आज जो नाइंसाफी उन्होंने तुम्हारे साथ की है, उसे मैं बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करूंगी। तुम अभी उनके पास जाओ और उनसे कहो कि तुम्हारी मां का हुक्म है कि राज गद्दी तुम ही संभालोगे। हां। तुम ही संभालोगे राज गद्दी।

(राम जी मां की बात सुन कर मुस्कुराते हैं। वह जानते हैं कि यह उनका गुस्सा है जो ऐसे अलफ़ाज़ मुंह से निकल रहे हैं।)

राम : अम्मां। आप जानती हैं कि मैं ने आज तक कभी वालिद साहब के किसी भी कुक्म को मानने से इनकार नहीं किया है। उनका हुक्म पत्थर की लकीरों की तरह है।

कौशल्या : मगर जिस हुक्म में तुम्हारी तबाही और ज़िल्लत छुपी हो उसको न मानने में कोई गुनाह नहीं है।

राम : मां। आपके मुंह से ऐसी बातें शोभा नहीं देतीं। मैं नहीं चाहूंगा कि वालिद साहब का कोई हुक्म मुझ से पूरा न होने पाए।

कौशल्या : भले ही वालिद की खुशी की खातिर मां का हुक्म ताक़ पर रखना पड़े ?

राम : नहीं। ऐसी बात नहीं है। मेरे लिए आप दोनों का हुक्म और प्यार बराबर है। मगर मेरा दिल नहीं कहता कि अब उनके पास जाऊं और उनसे ऐसी बात कहूं जिससे उनका दिल बर्दाश्त न कर सके।

कौशल्या : (मां उनको हैरानी से देखती रह जाती हैं। एक तवील ख़ामोशी के बाद बड़ी मुष्किल से कहती हैं।) हाय रे मेरी किसमत। ऐसी फूटी तक्दीर मेरे सिवा और किसकी होगी। कहां तेरे राज तिलक की खुशियां और कहां तेरी जिला वतनी और वनवास का सदमा।हे भगवान ! तू ने यह क्या किया। क्या किया भगवान।

(राम चंद्र उनको समझाने की कोशिश करते हैं।)

राम : आप सब्र से काम लीजिए मां। बस कुछ दिनों की तो बात है। फिर आपका यह वफ़ादार बेटा आपके सामने होगा। क्या आप यह नहीं चाहतीं कि दुनिया आपके बेटे को अपने बाप का वफ़ादार बेटा कहे ?

कौशल्या : हाय। मैं समझ गई। यह कैकयी का सौतिया डाह है जो तुझ और मुझ में तक्लीफ़देह जुदाई पैदा कर रही है। उफ ! यह चौदह बरस का फ़ासला और जुदाई। एक काश ! कि मेरी रूह इसी वक़्त मेरे जिस्म से निकल जाती।

(राम चंद्र उन्हें और हौसला बढ़ाते हैं।)

राम चंद्र : आप बिल्कुल परेशान मत हो मां। आपके बेटे को कुछ नहीं होगा। यह तक्दीर का फैसला है जिसे हर हाल में क़बूल करना ही होगा।

कौशल्या : ऐ मेरे लख्खे जिगर। मेरे कलेजे के टुकड़े। तुम्हारे अंदर यह बेपनाह मज़बूती कहाँ से आ गई। कोई और होता तो इस सदमे से हलाक हो जाता।मैं वह बदनसीब औरत हूँ जिसे ज़मीन पर भी सकून मयस्सर नहीं। फिर भला नर्क की आग क्यों क़बूल करने लगी। (फिर सीना पीट कर) आह ! क्या करूँ। किधर जाऊँ। जहाँ मेरे बेचैन दिल को सकून व राहत मयस्सर हो।हाय। मैं किसे देख कर इतने दिनो तक जीऊंगी। मैं मर क्यों नहीं जाती। भूली बिसरी क्यों नहीं हो जाती !

(एक बार चीख़ मार कर बेहोश हो जाती हैं। राम चंद्र जी उन्हें संभालने की कोशिश करते हैं।)

(अंधेरा)

सीन न. : 10

मक़ाम : महल का एक बाग़

(लक्ष्मण बेहद परेशान और फिक्रमंद अंदाज़ में टहल रहे हैं। तभी राम वहां आते हैं। उन्हें देखते ही वह तेज़ी से लक्ष्मण उनकी ओर बढ़ते हैं और बेहद जज़्बाती अंदाज़ में कहते हैं।)

लक्ष्मण : मैं ने जो कुछ सुना है क्या यह सच है बड़े भैया ? क्या यह सच है ?

(राम ख़ामोश रहते हैं और उसकी ओर देख कर मुहब्बत से मुस्कुराते हैं और उसके जज़्बाती अंदाज़ पर हैरत का इज़हार भी करते हैं।)

राम : हां। यह सच है मेरे भाई। यह सच है। मगर क्या हुआ। ज़िदगी तो इसी तरह के उतार चढ़ाव का नाम है। हर आसानी के साथ सख़्ती है और हर सख़्ती के साथ आसानी है। क्या यह सच नहीं है कि अब तक हम लोगों की परवरिश हमारे वालदैन ने बड़े लाड प्यार और मुहब्बत से किया। दुनिया का सारी नेअमतें हमें अता कीं। जिसकी तमन्ना नहीं की जा सकती थी वह सुख भी हमें मिला। क्या यह सच नहीं है लक्ष्मण ?

लक्ष्मण : (उसी जज़्बातीयत के साथ) मगर इसका क्या मतलब कि आपसे आपका हक़ इस बेदर्दी के साथ छीन लिया जाए ? न सिर्फ़ हमारे सठिआए वालिद ने आपको आपके जायज़ हक़ से महरूम किया है बल्कि आपको चौदह साल जंगलों की ख़ाक छानने पर मजबूर भी किया है। क्या यही है आपकी मुहब्बत और वालदैन की बेपनाह ख़िदमत का सिला ?

राम : मैं अपने वालदैन के तर्ई बदगुमानी की बात तो दूर उनसे नज़र मिला कर बात करने की ज़ुरत भी नहीं कर सकता। उन्होंने जो कुछ किया वह सब हमारे भले के लिए ही किया है।

लक्ष्मण : इसमें आपकी क्या भलाई हो सकती है भैया ? इसमें क्या भलाई हो सकती है आख़िर ?

०१ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

११ : ११

राम : कई बार जो चीज़ हमें बुरी लगती है, उसी में बहुत सारी भलाईयां छुपी होती हैं। ख़ैर, तुम यह क्यों नहीं समझते कि इंसान अपने तक्दीर के आगे बेबस है।

लक्ष्मण : मैं कोई तक्दीर वक्दीर नहीं मानता भैया। यह सब मां कैकयी की साज़िश है। और कुछ नहीं। उनका हसद और कीना है आपके तई जो उन्होंने वालिद साहब को ऐसा करने पर मजबूर किया।

राम : हमें किसी के बारे में ऐसी बात कहते और सोचने से परहेज़ करना चाहिए मेरे भाई। और मां बाप के बारे में तो बिल्कुल नहीं।

लक्ष्मण : भैया। भले ही आप मां बाप के आगे भक्ति और इताअतगुज़ारी का मुज़ाहिरा करें। मगर मुझ से ऐसा न होगा। मैं आपको आपका जायज़ हक़ दिला कर रहूंगा। मुझ से यह नाइंसाफी बर्दाश्त नहीं होगी। चाहे मुझे इसके लिए जंग ही क्यों न लड़नी पड़े।

राम : लक्ष्मण ! मेरे प्यारे भाई। मैं जानता हूँ कि तुम एक बहादुर और बासलाहियत नौजवान हो। मैदाने जंग में तुम बड़े बड़े सूरमाओं को धूल चटाने की ताक़त रखते हो। लेकिन इस ताक़त का मुज़ाहरा करने का यह मुनासिब वक़्त नहीं है। हमें हर हाल में मां बाप के हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म कर देना चाहिए। एक अच्छे और वफ़ादार बेटे की यही निशानी होती है। अपना गुस्सा उतार दो और शांत हो जाओ। गुस्सा बहुत बुरी चीज़ है। इसे अपने ऊपर हावी मत होने दो। हमें इस नाजुक मौक़े पर बहुत समझदारी से काम करने की ज़रूरत है। और अक़लमंद इंसान वह होता है जो परेशानी और मुख़ालिफ़ हालात में भी अपने होशो हवास को काबू में रखता है।हमें तो इस नाजुक लम्हे में अपने वालिद को दिलासा देना चाहिए कि वह हमारे लिए फ़िक्रमंद न हों। ग़म न करें। वैसे भी उनकी तबीयत इन दिनों ठीक नहीं रहती है। वह सदमे से निढ़ाल हैं।.....वजह चाहे जो भी रही हो। उन्होंने मां कैकयी से कुछ वादे किए थे और उनके लिए उन वादों को निभाना भी ज़रूरी था। मुझे इन सब बातों में कोई बुराई नज़र नहीं आती।

लक्ष्मण : वह कैसे ?

राम : एक राजा को अपने अहद और वादे का पाबंद होना चाहिए और एक बेटा को चाहिए कि हर आल में मां बाप का हुक्म बजा लाए। हम दोनों अपने अपने अहद से बंधे हुए हैं।..... हमें वैसे भी मां कैकयी और वालिद साहब के हुक्म को जल्दी बजा लाना चाहिए ताकि उनके मन में यह शक पैदा न हो कि हम उनके हुक्म की उदूली करेंगे। उसको नहीं मानेंगे। मां कैकयी ने भी वही किया जो हमारे तक्दीर में लिखा था। क्या यह सच नहीं है कि अब तक उन्होंने हमें हर तरह का प्यार दुलार दिया। कभी एहसास नहीं होने दिया कि हमारी वह सौतेली मां हैं।

(गहरी सांस ले कर) यह सब तक्दीर का खेल है भाई। और कुछ नहीं। हम किसी को इसके लिए कुसूरवार नहीं ठहरा सकते।

लक्ष्मण : ठीक है भैया। आप कहते हैं तो मैं आपकी बात मान लेता हूँ। मगर क्या यह भी जरूरी नहीं है कि जहां हम नाइंसाफी देखें उसके खिलाफ आवाज़ उठाएं ?

राम : मेरे भाई। तुम इसे अंदाज़ से मत लो। बस यह समझो कि मां बाप का एक हुक्म है जिसे हमें बजा लाना है। और कुछ नहीं।

लक्ष्मण : (कुछ पल की खामोशी के बाद) तो ठीक है। आप जो चाहें करें। मैं कुछ नहीं कहूंगा।

(कहते कहते उसकी आवाज़ भर्रा जाती है। और उसकी आंखों में आंसू उमड़ आते हैं। राम आगे बढ़ कर उसे सीने से लगाते हैं। उसका ढ़ारस बंधाते हैं। बहुत देर तक लक्ष्मण एक बच्चे की तरह सिसकते रहते हैं।)

लक्ष्मण : अब रोना बंद करो लक्ष्मण। यह अच्छी बात नहीं है। तुम्हारे आंसू मुझे भी कमज़ोर बना रहे हैं।

लक्ष्मण : (अपना आंसू पोंछते हैं। फिर कहते हैं।) मगर एक शर्त पर मैं आपकी बात मानूंगा भैया।

राम : वह क्या ?

लक्ष्मण : वादा कीजिए कि आप मना नहीं करेंगे ?

राम : ठीक है। वादा करता हूँ। अब बताओ भी तो सही।

लक्ष्मण : मैं भी आपके साथ जंगल चलूंगा।

राम : अरे। तुम क्यों परेशानी उठाओगे। और इस तरह हम दोनों भाई का मां बाप को छोड़ कर चले जाना ठीक बात भी नहीं होगी। उनकी खिदमत हमारे गायबाने में कौन करेगा ?

लक्ष्मण : भरत भैया और शत्रुघ्न भैया हैं ना उनकी खिदमत करने के लिए।

राम : (मुस्कुरा कर) चलो। जब तुम कहते हो तो तुम्हारी बात मान लेता हूँ। मगर मां सुमित्रा के पास जाओ और उनसे एक बार इजाज़त तो ले लो। अगर वह हां कह दें तो मुझे कोई ऐतराज़ न होगा।

लक्ष्मण : ठीक है भैया। मैं अभी उनके पास जाता हूँ।

राम : शाबाश।

(लक्ष्मण वहां से तेजी से चले जाते हैं। राम खड़े सोचते रह जाते हैं।)

कुछ पल खामोशी रहती है। जैसे ही वह वहां से जाने को होते हैं। इतने में सीता वहां आती हैं। वह काफी परेशान और बेकरार सी दिखाई देती हैं।)

सीता : आप यहां हैं मेरे सरताज। मैं उधर आपका बेताबी से इंतज़ार कर रही थी ?

राम : आओ। महारानी सीता। आओ।

सीता : क्या मैं जो कुछ सुन रही हूँ वह सच है मेरे आका ?

राम : (मुस्कुरा कर) हां। आपने जो कुछ सुना वह सच है।

सीता : फिर मैं इस महल में आपके बिना कैसे रहूंगी मेरे सरताज । मुझे भी अपने साथ ले चलिए ।

राम : कैसी बात करती हैं महारानी सीता ? जंगल की जिंदगी आपको ज़ेब नहीं देगी । आप उस तक्लीफ़ को बर्दाश्त नहीं कर पाएंगी । और चौदह बरस का वक़्त भले ही एक लंबा अर्सा दिखाई देता हो । मगर मुझे लगता है कि वह इस तरह गुज़र जाएंगे जैसा कि चौदह दिन या उससे भी कम । मैं चाहूंगी कि आप महल में रह कर मां कौशल्या, मां कैकयी और मां सुमित्रा के साथ वालिद साहब की ख़िदम करें । वैसे भी लक्ष्मण मेरे साथ जाने की जिद्द कर रहा है । अगर सब जंगल चले जाएंगे तो इस महल में कौन रहेगा ? हां ।

सीता : मैं कुछ नहीं सुनूंगी । जहां आप रहेंगे, वहीं मैं भी रहूंगी । मेरा वजूद ही क्या है अगर आप वहां मौजूद न हों । और आप यह मत सोचिए कि जंगल की जिंदगी मेरे ऊपर भारी गुजरेगी । मैं आपका चेहरा देख कर ही जी लूंगी ।वैसे भी किस्मत के लिखे को आज तक कोई टाल नहीं सका है । एक बार जब मैं मिथिला में थी तो एक ज्योतिष ने मुझे देख कर मेरी मां से कहा था कि मेरी जिंदगी में एक वक़्त ऐसा भी आएगा जब मुझे जंगलों की खाक छाननी पड़ेगी । मुझे लगता है कि उनकी पेशिनगोई सच थी ।

राम : ठीक है । अगर आपकी यही मर्ज़ी है तो यही सही । आईए । हमें अब और वक़्त ज़ाया नहीं करना चाहिए । अपने सफ़र की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए ।

(सीता खुशी से अपने शौहर के गले लग जाती हैं और राम प्यार से उसके सर पर हाथ फेरने लगते हैं । दोनों फिर खुशी खुशी से वहां से आगे बढ़ जाते हैं ।)

(अंधेरा)

सीन नं : 11

मकाम : राजा दशरथ का कमरा

(राजा दशरथ बेहद गमज़दह बैठे हैं। तभी सुमंत्र आता है।)

सुमंत्र : (डरते डरते) क्या मैं अंदर आ सकता हूँ महाराज ?

(दशरथ चौंक कर उसकी ओर देखते हैं। फिर पूछते हैं।)

दशरथ : कौन ? सुमंत्र ? आओ। अंदर आओ।

सुमंत्र : राजकुमार राम, लक्ष्मण और महारानी सीता आपसे जंगल खानगी से क़ब्ल आख़िरी दीदार की इजाज़त चाहते हैं।

(राजा दशरथ उनका नाम सुन कर ही बेहद खुश हो जाते हैं। बड़ी बेताबी से कहते हैं।)

दशरथ : हां। हां। उन्हें अंदर भेज दो। अंदर भेज दो।

सुमंत्र : जैसा आपका हुक्म महाराज।

(सुमंत्र चला जाता है। कुछ पल तक ख़ामोशी रहती है। तभी राम, लक्ष्मण और सीता अंदर तशरीफ़ लाते हैं।)

(राजा दशरथ बेकरारी में आगे बढ़ कर राम को गले लगे लेते हैं। लक्ष्मण को भी ख़ूब प्यार करते हैं और सीता को भी।)

राम : हम आपसे रूख़सत होने से पहले आपसे आख़िरी दीदार और दुआओं के लिए आए हैं अब्बा हुज़ूर। लक्ष्मण भी हमारे साथ जा रहा है और महारानी सीता भी। हालांकि मैं ने इन दोनों को मना किया कि मेरी वजह से इतनी बड़ी तकलीफ़ उठाने की ज़रूरत नहीं है। मगर यह दोनों मानने को तैयार ही नहीं हैं।

दशरथ : मेरे प्यारे बेटे राम। मेरी एक बात मानो। बोलो, मानोगे तो मैं कहूँ ?

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

(॥ श्री गणेशाय नमः ॥)

राम : जी कहिए ना। आपको कुछ कहने के लिए मुझसे इजाज़त लेने की क्या ज़रूरत है अब्बा ?

दशरथ : भले ही मैं तुम्हारी मां कैकयी से उनके साथ किए हुए वादों से बंधा हुआ हूँ। मगर तुम तो किसी वादे से बंधे नहीं हुए हो। तुम क्यों नहीं इस वादे के बंधन को तोड़ कर हुक्मत की बागडोर नहीं संभाल लेते ?

राम : आप जानते हैं अब्बा कि मुझे राज पाट और हुक्मत और शहंशाहीयत का कोई लालच नहीं है। अगर आपको हुक्म नहीं होता तो मैं इसकी जानिब नज़र उठा कर भी नहीं देखता।अब तो मुझे आपकी खिदमतगुज़ारी से जो सुकून हासिल होगा वह दुनिया की कोई भी दूसरी कीमती से कीमती चीज़ भी नहीं दे सकती। आप अपनी दुआएं और हमें अपना आशिर्वाद दीजिए कि हमें जो जिम्मेदारी दी गई है उसे बखूबी पूरा कर सकें।

(वह वालिद के कदमों पर झुक जाते हैं। लक्ष्मण और सीता भी उनसे आशिर्वाद लेते हैं।)

दशरथ : मेरी दुआ है कि तुम लोग सलामत रहो। ईश्वर तुम लोगों को अमन व अमान के साथ रखे। और जब वापस लौटो तो सीना फ़ख़ के साथ फुलाते हुए लौटो कि तुम ने अपने वालिद के लिए इतनी बड़ी कुरबानी दी है।

(तीनों उनकी बात पर खुश होते हैं।)

दशरथ : मैं अपने वज़ीरे आज़म को यह हुक्म देता हूँ कि वह तुम लोगों के लिए सफ़र की सारी तैयारी मुकम्मल करें। हाथी, ऊंट और बेहतरीन घोड़े तुम्हारे साथ हों और जितने दिनों तुम लोग जंगल में रहो, उतने दिनों का भरपूर रसद का इंतज़ाम भी हो। और साथ साथ तुम लोगों की हिफ़ाज़त के लिए बेहतरीन और बहादुर सिपाहियों का एक दस्ता भी हो।

(इतने में कैकयी दाख़िल होती है। मानों वह उनकी बातचीत सुन रही थी। वह झट कहती है।)

कैकयी : वाह। क्या दरियादिली का मुज़ाहिरा किया जा रहा है।..... अगर सारे ज़र व जवाहरात, बेहतरीन फौजी और साज़ व सामान इनके साथ जाएंगे तो फिर भरत के लिए क्या ख़ाक बचेगा यहां ? क्या वह ख़ाली हाथ हुकूमत चलाएगा अयोध्या की ?

(तीनों गौर से उनकी ओर देखते हैं मगर कोई जवाब नहीं देते। दशरथ को ज़रूर यह बात तीर की तरह चुभती है।)

राम : मां। आप फ़िक्रमंद न हों। हम वहां ख़ाली हाथ ही जाएंगे और ख़ाली हाथ ही लौटेंगे। अयोध्या की सारी चीज़ें यहां के लोगों के लिए हैं। इस पर हमारा कोई हक़ नहीं है।

दशरथ : नहीं नहीं। यह सारी चीज़ें तुम लोगों के साथ जाएंगी। हम महारानी कैकयी की सारी बात मानने के लिए पाबंद नहीं हैं।

(कैकयी को उनकी बात बुरी लगती है। वह बुरा सा मुंह बनाती है।)

कैकयी : फिर आप साफ़ साफ़ यह क्यों नहीं कह देते महाराज कि मैं तुम्हारे वादों को पूरा करने की ताक़त नहीं रखता ?

राम : नहीं, ऐसी बात नहीं है मां। आप परेशान मत हों। अब्बा हुज़ूर की यह मंशा क़तई नहीं थी। अच्छा। अब हमें चलना चाहिए। और देर करना ठीक बात नहीं।

कैकयी : अगर तुम अपनी बात में इतने ही सच्चे हो राम तो फिर यह शाही लिबास भी तर्क क्यों नहीं कर देते ?

(सब हैरत से उसकी ओर देखते हैं। राम उनके कहने का मतलब समझ जाते हैं।)

राम : हमारे लिए यह कीमती लिबास वाकई बेमानी है। हमें यहां से एक फ़कीर की तरह ही रूख़सत होना चाहिए।

कैकयी : मैं ने तुम लोगों के वास्ते एक ख़ास तरह का लिबास तैयार कराया है। कहो तो मैं मंगाऊं ?

राम : (मुस्कुरा कर) जी। शौक से मंगाईए। मुझे उसे हासिल कर के बेहद खुशी होगी।

(कैकयी ताली बजाती है तो मंथरा घास फूस और पतवार से तैयार कराए हुए तीन लिबास ले कर दाखिल होती है। सब देख कर हैरतज्जदह रह जाते हैं। वह कैकयी को देती है। काफी तनाव भरा माहौल है। राजा दशरथ के दुख की इत्तेहा नहीं है।)

कैकयी : यह लो बेटा राम।बेटा लक्ष्मण। यह तुम्हारे लिए। और यह सीता के लिए।

(तीनों खामोशी से ले लेते हैं। लक्ष्मण के चेहरे पर जरूर लेकिन नागवारी का एहसास पैदा होता है। मगर वह अपने जज़्बात पर काबू रखता है।)

(दशरथ मारे ग़म के अपनी हथेलियों से अपना चेहरा ढ़ंक लेते हैं।)

दशरथ : कितनी बेरहम औरत है यह। कितनी बेरहम है। हे भगवान। कितनी बेरहम औरत है यह।

(राम, लक्ष्मण और सीता वहां से चले जाते हैं। कैकयी और मंथरा के चेहरे पर एक कुटील मुस्कान फैल जाती है।)

(अंधेरा)

गीत :

दशरथ जुबान दे कर फंसे थे अज़ाब में
गरकाब थी उम्मीद की कश्ती सुराब में

करना पड़ा चेरागे—नज़र को जिला वतन
ताज़ा हुआ ब रंगे दिगर, फिर ग़मे कुहन

तदबीर अशकबार थी तक़दीर ख़ंदा ज़न
सर पीटते थे अपनी तबाही पर मर्द व ज़न

मुंह तक रहे थे आलमे हसरत में राम का
जोड़ा नमूदे सुब्ह बेबदला था शाम का

मां बाप से जुदा हुए नेकू बेवतन
नक़्शे क़दम पर राम के साया हुए लखन

कौशल्या के लब पे थे टूटे हुए वचन
सीता के चश्मे शौक में घर हो रहा था वन(शायर : जगेश्वर नाथ बेताब बरेलवी)

॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सीन न. 12

मक़ाम : रानी कैकयी का कमरा

(रानी कैकयी जीत की खुशी में लबों पर एक खास तरह की मुस्कुराहट लिए बैठी हैं। तभी उनका बेटा भरत दाखिल होता है। चूंकि बहुत दिनों बाद मुलाकात हुई है इसलिए उनकी मां बेअख़्तियार उनकी तरफ दौड़ी हुई जाती हैं। और बड़ी मुहब्बत से चिमटा लेती हैं।)

कैकयी : हाय मेरा बेटा। मेरी आंखों का तारा। मेरे दिल का करार। कैसा है तू ? क्या तू भूल गया था अपनी मां को ?

भरत : नहीं मां। ऐसी बात नहीं है। दिल तो चाहता था कि अगले पल ही आपके पास आ जाऊं। मगर नाना नानी आने ही न देते थे।

कैकयी : कहो, तुम्हारे नाना नानी कैसे हैं ? रास्ते में कितने दिन लगे ? रथ पर आए किसी और सवारी से आए ? सब ख़ैरीयत तो है ?

भरत : (मुस्कुरा कर) सब ख़ैरीयत है मां ? सब ख़ैरीयत है।आप इतनी परेशान क्यों हो रही हैं ?सातवें दिन यहां पहुंचा हूं। नाना नानी ने बहुत सारी सौगात भी दी है।वह पीछे आती होगी। पैगांबरों ने कहा कि खाना यहां खाओ और पानी अयोध्या का पीयो। इसीलिए भागा चला आ रहा हूं।मगर अब्बा हुजूर की यह ख़्वाबगाह आज क्यों सूनी है ? वह कहां तशरीफ़ रखते हैं ? क्या वह मां कौशल्या के पास हैं ? या फिर मां सुमित्रा जी के महल में हैं ? मैं उनका दीदार कहां जा कर करूं ?

(कैकयी सोचती है कि अचानक भरत को सारी बात बता देना मुनासिब नहीं है। पता नहीं इस बात को वह किस अंदाज़ से ले। इसलिए वह कहती है।)

कैकयी : जिंदगी मौत का पेशख़ीमा है बेटा। जो इस दुनिया में आया है, उसे एक न एक दिन तो रुख़सत होना ही है।महाराज की जिंदगी का बाग़ भी अब दुनिया की सैर से ऊब

चुका था। उन्होंने वैसे अपनी पूरी जिंदगी हर मामले में नेकी और सच्चाई से बसर की है। अब तुम उनके जानशीन हो बेटा। अब सारी फिक्र छोड़ो और राज गद्दी संभालो।

(भरत का चेहरा यकायक फ़क पड़ जाता है। उन्हें मां की बातों पर यकीन ही नहीं आता। वह हैरत से देखते रह जाते हैं।)

भरत : यह क्या कह रही हैं मां ? आप होशो हवास में तो हैं ?आह! मुझे इतने लंबे दिनों के लिए अपने नानिहाल जाना ही नहीं चाहिए था। वरना यह बातें ही न होतीं जो हो रही हैं।अच्छा ! अभी यह बताईए कि अब्बा हुजूर कहां हैं ? मेरे देवता जैसे बड़े भाई श्री राम चंद्र जी कहां हैं ?

कैकयी : मेरे प्यारे बेटे। मुझे ग़लत मत समझना। सच तो यह कि तुम्हारे वालिद साहब की सारी उम्र राम राम कहते गुज़री है। और लक्ष्मण को भी तुम से कहीं ज़्यादा चाहते थे। शत्रुघ्न भी तुम से बहुत बेहतर था उनकी निगाह में।

भरत : आपकी बात मुझे बिल्कुल समझ में नहीं आ रही है मां। आप बातों को इस तरह उलझा क्यों रही हैं ? सारी बात साफ साफ क्यों नहीं बतातीं ?

कैकयी : हाय। बेटा। मैं क्या कहूं। राम चंद्र और लक्ष्मण दोनों वन को चले गए। उनके साथ सीता भी गई हैं।

(भरत इस बात को सुन कर हैरान रह जाते हैं। उन्हें कुछ समझ में नहीं आता।)

भरत : मैं कुछ समझा नहीं मां। उनकी कोई ख़ता और कोई क़सूर ? आखिर किस बात की सज़ा मिली है उन्हें ?

कैकयी : क़सूर और ख़ता की कोई बात नहीं है बेटा। राम चंद्र ऐसे धर्मात्मा और लायक़ से कोई जुर्म और ख़ता भला कैसे हो सकती है !.....लो सुनो। मैं तुम्हें सारी बातें सच सच बताती हूं।

बेटा ! मैं ने तुम्हारी भलाई की खातिर कभी अपनी जिंदगी की खुशियों की परवाह नहीं की। दुनिया वालों के कहने सुनने का खयाल न किया। और ईश्वर का हजार हजार शुक्र है कि उसने मेरी बात रख ली।

भरत : अब बातों को और तूल मत दीजिए मां। साफ साफ बताईए कि मामला क्या है।

कैकयी : बात बस इतनी सी है कि तुम्हारे वालिद साहब राम चंद्र का राज तिलक करना चाहते थे। मगर मेरी ख्वाहिश थी कि तुम राज गद्दी संभालो। इसलिए मैं ने उनके वनवास पर जोर दिया। और हमेशा अपने वचन और वादे पर टिके रहने वाले तुम्हारे बेलौस और बेगुर्ज वालिद राजा दशरथ ने तुम्हें राज गद्दी देना मंजूर कर लिया और कह दिया कि राम चंद्र वन की राह लें। लक्ष्मण और जानकी को भी साथ जाने दिया। इस तरह पहले तो सभी को अपनी आंखों से दूर किया और फिर इस रंज व गम में तड़प तड़क कर दुनिया से ही चल बसे।मुझे भी उनके इस तरह अचानक जाने का बहुत गम है बेटा।

(भरत को अपनी मां की बातों पर यकीन नहीं आता। बड़े भाई और भाभी और लक्ष्मण की जुदाई का समदमा बर्दाश्त से तो बाहर था ही, साथ ही वालिद की मौत की खबर उसे और निढाल कर देती है।)

कैकयी : वाह रे महाराज की सखावत। जुबान से एक बात जो कह दी तो फिर कभी उससे पीछे न हटे। जान दे दी मगर कौल न हारे। धन्य हो भरत का जिसके वालिद ऐसे धर्मात्मा हुए। जिनका यश कभी नहीं मिट सकता। तुम्हारे भाई राम चंद्र की तारीफ न करना भी बड़ी बेइंसाफी होगी। वाह ! क्या लायक बेटा निकला। वालिद की कसम पूरी करने के लिए राज पाट और घर बार सब कुछ त्याग दिया।कोई और होता तो बगावत पर आमादह हो जाता बेटे। यह सब कुछ मैं ने तुम्हारी भलाई के लिए ही किया है।तुम हाथ मुंह धोओ। फिक्र व रंज न करो। अब तुम्हारा फर्ज है कि चैन से मुल्क के काम काज की जिम्मेदारी संभालो। और एक अच्छे राजा के रूप में अपने वालिद की रूह को सकून पहुंचाओ।

भरत : आप कितनी सख्त दिल हैं मां ! आप कितनी सख्त दिल हैं !आपने यह क्या कर दिया ? मेरे वालिद की अपनी बेतुकी बातों से जान ले ली। वालिद जैसे भाई को जंगल जाने

पर मजबूर कर दिया। देवी जैसी भाभी के सुख चैन को छीन लिया। हाय ! आप एक मां हैं या राक्षसी ? हाय ! इस दिन को देखने से पहले ही मैं मर क्यों नहीं गया ?.....मैं मर क्यों नहीं गया ?

(वह दीवार से मुक्का मार कर अपनी नाराज़गी और लाचारी का इज़हार करता है।)

कैकयी : अपने आपको संभालो बेटा। इस तरह ग़म न खाओ। जिंदगी आगे बढ़ते रहने का नाम है। वैसे भी इस दुनिया में जो आया है उसे किसी न किसी दिन तो जाना ही है। वजह चाहे जो भी हो। राज पाट भी किसी को आसानी से नसीब नहीं होता। तुम खुशकिस्मत हो कि अयोध्या का राज पाट संभालने का तुम्हें मौका इनायत हुआ है। अपनी हलफ़ बरदारी और शपथ ग्रहण की तैयारी करो।

भरत : आप कितनी ज़ालिम हैं मां। आप कितनी बड़ी ज़ालिम हैं ! मुझे तो आज इस बात पर शर्म महसूस हो रही है कि आप मेरी मां हैं। मैं ने आपकी कोख से जन्म लिया। ऐ काश। मैं पैदा ही न हुआ होता।

कैकयी : बेटा। ऐसी बात न कहो बेटा। मुझे बुरा मत समझो। मैं ने जो कुछ किया है सब तुम्हारे भले के लिए ही किया है।

भरत : मेरे भले के लिए ? मेरे देवता जैसे वालिद की जान ले कर ? मेरे वालिद जैसे भाई और मां जैसी भाभी को हमारी निगाहों से बरसों के लिए दूर कर के ? लोग क्या कहेंगे कि भरत उस मां का बेटा है जिसने सारे ख़ानदान की इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी।आप ने मां कौशल्या पर भी रहम नहीं किया ! उन्हें उनके कलेजे के टुकड़े को उनकी जिंदगी से दूर कर दिया।मां। शास्त्रों में लिखा है कि बड़े भारी पाप करने वालों की निजात उसी हालत में मुमकिन है जब वह आग में जल मरे या गले में फांसी लगा ले।आप तो इसी तरह अज़ाब से छूट सकती हैं। मगर मैं अपनी जान कैसे बचाऊंगा ? मेरी निजात तो तभी मुमकिन है जब मैं श्री राम चंद्र जी को यहां ला कर उनकी ख़िदमत गुज़ारी का ऐजाज़ हासिल करूं।

(यह कहते हुए तेजी से वहां से निकल जाता है। कैकयी हैरान व परेशान देखती रह जाती है।)

कैकयी : (बेकरारी से) बेटा ! मेरी बात तो सुन । कहां जा रहा है तू ?

(भरत उनकी बातों पर ध्यान नहीं देता। कैकयी हाथ मलती रह जाती है।)

(अंधेरा)

गीत :

चढ़ कर कहा निशाद से कश्ती को खोल दूं

बेड़ा अगर हो पार तो सोने से तौल दूं

जाने न पाए राम तो मुंह मांगा मोल दूं

कुछ और चाहता है तो, जल्दी से बोल, दूं

चौंका इस इज़तिराब से इंसान था निशाद

कुछ इतनी कशमकश थी कि हैरान था निशाद

बोला, क़सद क्या है, इरादा किधर का है

आया है कोई साथ न सामां सफ़र का है

घबरा के जब भरत ने कहा फ़िक्र है फ़िज़ूल

डाले से आफ़ताब पर पड़ती नहीं है धूल

मैं हूं गुलाम राम का, किस्सा को दे न तूल

हंस कर कहा निशाद ने मेहनत हुई वसूल (शायर : जगेश्वर नाथ बेताब बरेलवी)

॥

॥ अथ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

॥ भक्त्या भगवत्पूजयेत् ॥

सीन न. 13

(अचानक फ़िजा में हाथियों की चिंघाड़ और घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई देती है मानों कोई बड़ी फौजी लश्कर तआकुब में निकल आया है। लक्ष्मण एक जगह तीर कमान और तलवार से लैस खड़े हैं और उस आवाज़ पर कान दिए हुए हैं। तभी राम चंद्र अपनी कुटिया से निकल कर आते हैं और कुछ पुरतजस्सुस अंदाज़ में पूछते हैं।)

राम : यह आवाज़ कैसी है लक्ष्मण ? यह शोर कैसा ?

लक्ष्मण : मुझे तो लगता है कि कोई दुश्मन की फौज हम पर हमला आवर होने वाली है।

(लक्ष्मण फ़िक्रमंद अंदाज़ में आगे बढ़ जाते हैं। राम ख़ामोश खड़े रह जाते हैं।)

(इतने में लक्ष्मण भागे हुए आते हैं। वह बेहद घबराए हुए हैं।)

लक्ष्मण : भैया ! भैया !

राम : (मुस्कुरा कर) अरे। बोलोगे भी। क्या बात है ?

लक्ष्मण : बड़ा ग़ज़ब हो गया। भाई भरत अपनी पूरी फौज और लश्कर के साथ हम पर हमलाआवर होने वाले हैं।

राम : (गुस्से से) क्या बेवकूफी की बात कर रहे हो लक्ष्मण ? तुम होश में तो हो ? भरत का यहां क्या काम ! उसे क्या हुक्मत के काम काज से फ़ुर्सत होगी जो जंगल की सैर के लिए निकल आया ?

लक्ष्मण : सैर नहीं करने आए हैं भैया। बल्कि हम पर हमला करने आए हैं। क्या उन्हें आपको हुक्मत से बेदख़ल कर के उनका जी नहीं भरा जो अब आपकी जिंदगी लेने पर आमादह नज़र आते हैं।

राम : तुझे क्या यकीन है किवह भरत ही हैं औ वह फौजी लश्कर उन ही का है ?

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥
अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !
अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !
अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अर्जुन ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव ! त्वं हि पाण्डव !

लक्ष्मण : इन आंखों ने उन फौजियों के घोड़ों और हाथियों को जंगल की धूल उड़ाते हुए देखा है। और अगर मेरी आंखों ने सच देखा है तो फिर वह भरत भैया ही थे।

राम : अगर यह सच है तो उसे इत्मीनान से यहां आने दो। हम भी उसका इस्तक़्बाल उसी ऐहतिमाम से करेंगे जिस नीयत से वह हमारे पास आता है। अगर उसका दिल नर्म रहा तो हमें भी नर्म दिल जाएगा और अगर उसने कुछ हिमाक़्त की तो अपनी ग़लती भर उसकी सज़ा जाएगा।

(फौजी घोड़ों और हाथियों के चिंघाड़ का शोर तेज़ होता है। सब चौकन्ने और होशियार हो जाते हैं। एक अजीब किस्म का तनाव पैदा हो जाता है।)

राम : तुम इत्मीनान और जमा ख़ातिर रखो लक्ष्मण। पहले उसे मेरे पास आने दो।

(इतने में बाहर का शोर थम जाता है। और फिर कुछ पल की ख़ामोशी के बाद भरत तशरीफ़ लाते हैं जो कि शाही लिबास में हैं। वह आते ही राम चंद्र के पांव छूते हैं और बेहद ज़्ज़बाती हो जाते हैं। और उनकी आंखों से वहां का माहौल देख कर आंसू रवां हो जाते हैं।)

(लक्ष्मण ख़ामोशी से यह नज़ारा देखते रह जाते हैं।)

राम : कहो, भरत कैसे आए ? वालिद साहब ने तुम्हें राज सिंहासन दे दिया। अब तुम पर यह लाज़िम है कि हुकूमत के काम-काज को पूरी ज़िम्मेदारी और ईमांदारी से पूरा करो। तुम को मालूम होना चाहिए कि जो राजा अपनी रियाया से ग़ाफ़िल होता है वह कहीं का नहीं रहता।

भरत : (रुंधी आवाज़ में) मैं आपसे मिलने चला आया भैया। इरादा तो था अकेले आने का मगर मेरे फौजी सिप्पेसालारों और जेनरलों ने यह मशिवरा दिया कि इस जंगल में तनहा जाना ठीक नहीं। क्या पता कब राक्षसों और दुश्मनों से मुक़ाबला हो जाए। साथ में अयोध्या के लोग भी मेरे साथ आए हैं ताकि वह आपको इस बात के लिए राजी कर सकें कि आप चल कर अयोध्या में राज गद्दी संभालें।

राम : ठीक है। मगर तुम्हें अपनी ज़िम्मेदारी से एक पल के लिए भी ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए। (फिर लक्ष्मण की तरफ देख कर) मुझे भरत से अकेले में कुछ बातें कर लेने दो। काफी दिनों बाद हम दोनों इस तरह मिले हैं।

लक्ष्मण : जैसा आपका हुक्मभैया।

(लक्ष्मण वहां से चले जाते हैं। कुछ पल ख़ामोशी रहती है।)

राम : जंगी हथियारों की दुरुस्तगी और निगरानी में कोई कमी तो नहीं करते भरत ? तुम्हें मालूम है कि वालिद साहब की हुक्मत दुनिया की अब तक की सबसे पायदार और मज़बूत हुक्मत थी। और तुम उनके काबिल जानशीन हो। उनकी इज़ज़त की हिफ़ाज़त करना हम सब का मुशतरका फ़र्ज़ है।

भरत : मैं हुक्मती उमूर में ज़रा भी कोताही नहीं करता भैया। और न ही ऐसी कोताही किसी की बर्दाश्त करता हूँ। मेरे लिए अपनी रियाया को सुख शांति देना, अमन व सुकून मुहैया कराना और उनको खुश रखना और उनकी हिफ़ाज़त करना अव्वलीन ज़िम्मेदारियों में से एक है।

राम : कोई भी काम बिना सलाह व मशिवरे के मत करना मेरे प्यारे भाई। अपने साथ दो चार अच्छे मुशीर ज़रूर रखना। मशिवरा में बरकत होती है।आओ बैठो। कुछ खाओगी पीयोगे ? तुम्हारी भाभी को ख़बर करूँ ?

भरत : (खुशी और बड़ी बेचैनी से) भाभी कैसी हैं ? उनको देखने के लिए तो मेरी आंखें तरस गईं।

राम : वह ठीक हैं। तुम लोगों को बेपनाह याद करती हैं।यह बताओ। मां कौशल्या , मां कैकयी और मां सुमित्रा कैसी हैं ? शत्रुघन का क्या हाल है ? वालिद साहब कैसे हैं ? उनकी तबीयत कैसी रहती है ? मुझे याद कर के ग़मज़दह तो नहीं होते ?

(भरत वालिद साहब का ज़िक्र सुनते ही उदास हो जाते हैं। उनकी आंखें डबडबा जाती हैं।)

राम : क्या बात है भरत ? तुम मुझ से कुछ छुपा तो नहीं रहे हो ?

भरत : नहीं भैया। मगर आपको बता दूं कि वालिद साहब अब इस दुनिया में नहीं रहे। उन्होंने इस फ़ानी दुनिया को हमेशा के लिए ख़ैरबाद कह दिया है।

राम : (हैरत से देखते हुए) क्या बकते हो ! ऐसा कैसे हो सकता है ? मैं ने तो वालिद साहब को बिल्कुल सही सालिम छोड़ा था। यह अचानक क्या हो गया ?

भरत : (कुछ पल की ख़ामोशी के बाद) वालिद साहब आपकी जुदाई और आपके साथ हुई नाइंसाफी का ग़म बर्दाश्त नहीं कर सके। और इस सदमे से चल बसे।

(राम जी पर भी एक सदमे की सी कौफ़ियत तारी हो जाती है। कुछ पल तक ख़ामोश रहते हैं।)

राम : ईश्वर उनकी रूह को सुकून पहुंचाए। शायद किसमत में यही लिखा था और तक्दीर के इस खेल के आगे हर कोई बेबस होता है मेरे भाई। चाहे कोई लाख जतन कर ले।

भरत : इस हालते यतीमी में बस आप का ही सहारा है बड़े भैया।मैं ने शत्रुघन के साथ मिल कर उनका क्रियाकर्म और श्राद्ध भी करा दिया। आप भी चाहें तो पिंडदान कर के अपने फ़र्ज से सुबुकदोशी हासिल कर सकते हैं। त्रेता युग में तमाम बेटों के लिए पुत्र कर्म करना बेहद ज़रूरी है। हां, कल्युग में सिर्फ एक बेटे पर ही यह फ़र्ज महदूद होगा।

राम : मुझे तो अफ़सोस इस बात का है मैं उनकी उस तरह ख़िदमत नहीं कर सका जितना कि मैं करना चाहता था। ... ख़ैर जो होना था हुआ। आओ बैठो। तुम्हें कुछ बातें मैं बतौर नसीहत कहना चाहता हूं। उसे ख़ूब याद रखना।

(दोनों बैठ जाते हैं।)

राम : हमेशा आली ख़ानदान लोगों और आलिमों की इज़्ज़तअफ़ज़ाई किया करना। याद रखना कि इल्म से बढ़ कर कोई नेअमत नहीं। और लोगों की ख़िदमत से बढ़ कर कोई ख़िदमत

नहीं। इससे राजा की इज्जत में इजाफ़ा होता है। जहाँ रज़ीलों और बदमाशों से मुंह लगाया और राहो रस्म बढ़ाई, वहीं समझो कि सलतनत की लुटिया डूब गई।

भरत : जी भैया।

राम : एक दानिशमंद और अक़लमंद जो कुछ कर सकता है उसके मुक़ाबले में एक लाख बेवकूफ़ों की ताक़त कोई मानी नहीं रखती। वज़ीर मुल्क में अगर एक ही लायक़ हों तो हज़ार वज़ीरों से बेहतर है। हां, वज़ारत कभी किसी ना तजुर्बेकार को देना भी एक बड़ी ग़लती है। ..
.....याद रखना, रियाया और अवाम से अगर कोई ख़ता हुई तो उसकी ग़लती के मुताबिक़ सज़ा देना लाज़िम और ज़रूरी है ताकि मुल्क में अमन व अमान की फ़िज़ा बनी रहे। मगर यह भी याद रखना चाहिए कि किसी भी मज़लूम के साथ बेइंसाफ़ी करना भी सलतनत के ज़वाल का बाएस बनता है।फ़ौज का सिप्पेसालार हमेशा बहादुर और हौसलामंद और अक़लमंद होना चाहिए। लोगों में इंसाफ़ कायम करते वक़्त यह पेशे नज़र न होना चाहिए कि कौन ग़रीब है और कौन अमीर और कौन मामूली। क़ानून की नज़र में सब बराबर हैं।

भरत : जी भैया।

राम : उमूरे सलतनत में सफ़ीरोंकी बड़ी ज़रूरत होती है। उनके इंतख़ाब और चुनाव में बड़ी अक़लमंदी से काम लेना चाहिए। दुश्मन के मामले में कभी यह न समझना चाहिए कि वह कमज़ोर है। उसकी कमज़ोरी पर जो तरस खाएगा वह ज़रूर मुसीबत में गिरफ़्तार हो कर पछताएगा।अयोध्या का नाम महमल या फ़र्ज़ी नहीं है।उसके नाम का मतलब यह है कि वह दारुलसलतनत जिसे आज तक फ़तह न किया जा सका हो। ताजिरों और व्यपारियों की हिफ़ाज़त भी बहुत ज़रूरी है। मुल्क की मईशत का दारोमदार उन ही पर होता है।

भरत : जी भैया।

राम : बेवाओं और यतीमों , कमज़ोरों , बेरोज़गारों और मजबूरों की पूरी देखभाल सलतनत की अव्वलीन ज़िम्मेदारी है। और औरतों की इज्जत करना हर मर्द का फ़र्ज़ ऐन होना चाहिए। उनकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी हुकूमत पर आएद होती है।

भरत : जी ।

राम : और सौ बात की एक बात । जिससे मिलना बड़ी मुहब्बत और खाकसारी के साथ मिलना । उससे मुहब्बत से पेश आना । यह दुश्मन को दोस्त और गुलाम बना देती है । बजुर्गों ने ठीक ही कहा है कि यह वे बातें हैं जिस पर अमल करने से सलतनत को कभी ज़वाल का सामना नहीं करना पड़ता ।

भरत : आपकी सारी बातें सर आंखों पर भैया । मैं इन पर ज़रूर अमल करने की कोशिश करूंगा । मगर मेरी दरख्वास्त है कि आप मेरी जगह तख्त सलतनत पर जलवा अफ़रोज़ हो जाएं । मैं यही आरजू ले कर बड़ी उम्मीदों के साथ आपके पास आया हूँ ।

राम : (कुछ पल की खामोशी के बाद) तो क्या तुम चाहते हो कि अपने स्वर्गवासी वालिद और मां कैकयी के साथ किए हुए वादे को फ़रामोश कर दूँ ?

भरत : मेरी गुज़ारिश को आप यूँ न टालिए भैया । यूँ न लौटाईए ।

राम : अक़लमंद हो कर ऐसी बेवकूफी की बातें करते हो भरत ? तुम को जो ज़िम्मेदारी दी गई है, उसे तुम पूरा करो । और मुझे जो ज़िम्मेदारी दी गई है उसे मैं पूरा करूँ । और मेरी बात याद रखना । मां कैकयी की शान में कभी कोई गुस्ताख़ी का कलमा भी मत कहना । अगर तुम ने ऐसा किया तो मुझे बहुत दुख होगा और मैं नाराज़ हो जाऊंगा । अच्छा आओ । मैं तुम्हारी भाभी से तुम्हें मिलवाता हूँ । वह बड़ी बेसब्री से तुम्हारी राह देख रही होंगी ।

(दोनों फिर आगे बढ़ जाते हैं ।)(अंधेरा)

गीत :

छू कर चरण भरत ने कहा देर क्या है अब

फिरते ही पीठ देखिए, कैसा हुआ ग़ज़ब

है राज पाट आपकी, गद्दी है आप की
तक्मील उसकी अब हो जो मर्जी थी बाप की

बोले लरज़ के राम कि अब हम न जाएंगे
हर हाल में पिता के वचन को निभाएंगे

बेबस हुए भरत तो बस दो पादुकाएं दीं
रुखसत किया तपाक से मिल कर दुआएं दीं

(शायर : जगेश्वर नाथ बेताब बरेलवी)

सीन न. 14

मक़ाम : जंगल

(श्री राम आते हैं। उनकी बेगम जानकी उनके पास आती हैं। लक्ष्मण तीर धनुष लिए गोया भाई भाभी की निगरानी में खड़े हैं।)

राम : इस अजीम जंगल की खाक छानते हुए तेरह बरस कैसे गुज़र गए हमें पता ही नहीं चला लक्ष्मण। बस, अब एक साल की बात और है। फिर हम खुशी खुशी अयोध्या वापस लौट जाएंगे। ईश्वर से दुआ करो कि जहां यह सारा वक्त बहुस्न व खूबी से गुज़र गया तो यह भी गुजर जाए।

लक्ष्मण : ईश्वर हमारे साथ है भैया। हम खुशी खुशी अपना किया हुआ वादा पूर कर के लौटेंगे।

(राम और सीता दोनों उसकी बातों पर मुस्कुराते हैं।)

इतने में शर्पनिखा आती है। राम चंद्र के हुस्न व जमाल को देख कर हैरान सी रह जाती है। कोई उसे पहचानता नहीं है। इसलिए सब हैरत से उसकी तरफ देखते हैं।)

राम : (आगे बढ़ कर) कौन हो तुम ? क्या चाहती हो ?

शर्पनिखा : मैं जो भी हूं। वह बता दूंगी। मगर तुम कौन हो ?

राम : (मुस्कुरा कर) मेरा नाम राम चंद्र है। अयोध्या के राजा दशरथ का बेटा। वालदेन के हुक्म की तामील थी इसलिए यहां इस जंगल में रहने आ गया।यह मेरी बेगम सीता हैं। और यह मेरा छोटा भाई लक्ष्मण।

लक्ष्मण : भैया। यह तो शकल और सूरत और अपनी बातों से कोई राक्षसी मालूम होती है जो एक खूबसूरत औरत के वेश में हमें परेशान करने आई है।

शर्पनिखा : लंका के राजा रावण जैसे प्रतापी राजा की बहन हूं। कुंभकरण मेरा भाई है। वैसे तो वह हर वक्त सोता रहता है, मगर ताकत उसमें ऐसी है कि जैसे वह नींद से बेदार होता है, वैसे गोया ज़मीन में भूंचाल आ जाता है। एक भाई भभीकन है जो राक्षस की औलाद हो कर भी ऐसे धर्मात्मा हैं कि कभी ईश्वर की याद से गाफिल नहीं होते। खरदूशन जो इस

जंगल के राजा हैं, वह भी मेरे भाई हैं। वैसे मेरा नाम शर्पनिखा है। औरत समझ कर मुझ पर तरस मत खाओ। मैं अपनी ताकत में अपना नज़ीर नहीं रखती। इरादा तो यह था कि तुम्हें खा जाऊं। लेकिन तुम्हारी खूबसूरती और हुस्न व जमाल देख कर तरस आ गया।

लक्ष्मण : ऐ लड़की ! जुबान संभाल कर बात कर। तुझे पता नहीं कि तू किससे बात कर रही है ?

शर्पनिखा : (डांटते हुए) तुम बीच में मत टपको। समझे ? खैर मनाओ कि मैं ने तुम लोगों पर रहम से काम लिया है। वरना तू अभी अपनी भाभी के साथ इस दुनिया से कब का रुखसत हो चुका होता। तेरी हड्डी हड्डी चबा डालती। (फिर राम जी से) इन दोनों को मेरी नज़रों से दूर कर दो। हम दोनों फिर सकून व इत्मीनान से एक साथ ज़िंदगी गुज़ारेंगे।

(इस बात पर सीता घबरा जाती हैं।)

राम : शर्पनिखा। तुम जानती हो कि मेरी शादी हो चुकी है। मेरी बेगम मेरे साथ हैं। अगर तुम्हें वाकई हम पसंद हैं तो अपने छोटे भाई लक्ष्मण से तुम्हारी शादी करवा सकता हूं।

लक्ष्मण : मैं ऐसी चुड़ैल से तो कभी शादी नहीं करूंगा भैया।

शर्पनिखा : तुम से शादी कौन करने जा रहा है बेवकूफ़। (फिर राम के पास आ कर, फिर सीता की तरफ कंखियों से देख कर) तुम्हें सीता का शौहर कहलाते हुए शर्म नहीं आती ? न जाने ऐसी भोंडी सूरत तुम्हें कैसे देखी जाती है। ज़रा मेरी तरफ़ देखो। ऐसा हुस्न व जमाल कि स्वर्ग की अप्सराएं भी शर्मा जाएं।

(इस बात पर लक्ष्मण बहुत नाराज़ होते हैं। सीता जी को भी उसकी बात बहुत बुरी लगती है। मगर राम कमाल हौसले और ठहराव के साथ उसकी बेतुकी बातें सुनते रहते हैं।)

शर्पनिखा : मुझे तुम पर तरस आता है कि ऐसी बदसूरत औरत के साथ अपनी ज़िंदगी ख़राब कर रहे हो।अच्छा। लो। मैं अभी सीता को हड़प किए जाती हूं। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।

(यह कहते हुए वह मुंह फुला कर यकायक बिजली की तरह कौंधती है। सीता जी सहम कर दो कदम पीछे हट जाती हैं। लक्ष्मण चौकन्ने हो कर तलवार तान लेते हैं।)

राम : ख़बरदार ! जो एक लफ़्ज़ और निकाला तो। और ऐसी कोई दूसरी हरकत की तो।

शर्पनिखा : (गुस्से से बेकाबू हो कर) फिर क्या करेगा तू ? मेरे ही घर में मुझ ही पर धौंस ! तुम्हारा वह हाल करूंगी कि दुनिया को आंख दिखाने के काबिल भी न रहोगे। ख़ैर इसी में है कि मेरी बात मान लो। इस बदशकल औरत को अभी छोड़ दो। और मेरे साथ ब्याह रचा लो।

राम : और अगर ब्याह न रचाई तो ?

शर्पनिखा : तो फिर यह।

(वह अपने ज़हर से दूसरा ख़तरनाक हमला करती है। उस शोला में सब गिरफ़्त में आ जाते हैं। तभी लक्ष्मण उस पर हमला कर देते हैं।)

लक्ष्मण : नीच जात। तेरी यह हिम्मत कैसे हुई ऐसी बात कहते हुए। और यह हरकत करते हुए।

(तलवार की वार से शर्पनिखा की नाक और कान कट जाते हैं और खून के फव्वारे छूट जाते हैं। वह तेजी से चिल्लाते हुए वहां से भागती है।)

शर्पनिखा : हे भगवान ! इसने मुझे मार दिया। मार दिया मुझे। मेरी नाक और कान दोनों काट ली।

(सब उसे भाग कर जाते हुए देखते हैं।)

(अंधेरा)

सीन नं : 15

मक़ाम : रावण का महल

(रावण बेहद गुस्से में टहल रहा है। और चिल्ला चिल्ला कर कह रहा है।)

रावण : किस कमबख्त के हाथ टूटे हैं और किस जालिम ने मेरे कुंभे की नाक काट डाली है। अरे ! भभीकन। बताओ। किसकी मौत फड़फड़ाई है। जिसने सांप के मुंह में उंगली दी है, क्या उसने रावण का नाम नहीं सुना है ?

भभीकन : अयोध्या के राजा दशरथ का बेटा है बड़े भैया। उसी ने हमारी बहन का यह हाल किया है। जब से मैं ने उसे इस हाल में देखा है, मैं तो गुस्से से बेकाबू हुआ जा रहा हूं। आप हुक्म देंतो उन जालिमों का वह हाल करूं कि सारी दुनिया याद रखेगी।

रावण : मैं भी उनसे ऐसा बदला लूंगा जो इसी जुल्म के शायाने शान होगा। उसने अगर हमारी बहन की इज्जत के साथ खिलवाड़ किया है तो हम भी उसकी औरत की इज्जत को मिट्टी में मिला कर रख देंगे। उसके साथ वह हाल करेंगे कि सारी उम्र शर्म से मुंह छुपाती फिरेगी।चलो, राम, लक्ष्मण और सीता को उसके झोंपड़े से घसीट कर ले आओ। तभी मेरे कलेजे की आग ठंडी होगी।

दुनिया में जावेदां है तो रावण का नाम है

छूता है पांव काल भी अपना गुलाम है

छत्रानियों को शस्त्र बजाने से काम है

बदला लिया न आज तो जीना हराम है

भभीकन ! तुम जंग की तैयारी करो।

भभीकन : जैसा आपका हुक्म भैया।

(वह चला जाता है। रावण गुस्से से पेचोताब खाता हुआ टहल रहा है। फिर वह भी तेजी से बाहर निकल जाता है।)

(अंधेरा)

सीन न. 16

मक़ाम : एक खुली जगह

मारीच : (कुछ बेचैनी की हालत में टहल रहा है। और अपने आप से बड़बड़ाते हुए कह रहा है।)

मारीच : मुझे अंदेशा है कि यहां कुछ अनहोनी होने वाला है। जब से रावण की बहन शूर्पनिखा के साथ बेइज्जती की गई है, एक खौफनाक युद्ध का साया मंडराने लगा है। मुझे मालूम है कि रावण इस बेइज्जती का बदला लिए नहीं रहेगा।

(तभी रावण आता है। मारीच राक्षस अदब से उसके आगे सर झुकाता है।)

मारीच : मैं आपको ही याद कर रहा था लंका महाराज। बताईए। क्या हुक्म है मेरे लिए ?

रावण : तुम इस दुनिया के सब से होशियार और ताकतवर राक्षसों में से एक हो मारीच। मुझे तुम्हारी बहादुरी और अकलमंदी दोनों पर फख्र है।

मारीच : जी। आपकी बहन शूर्पनिखा के साथ जो कुछ हुआ वह अच्छा नहीं हुआ। इसका मुझे बेहद दुख व मलाल है।

रावण : उसी गुस्से की आग में तो मैं जल कर कोयला हुआ जा रहा हूं। मेरे दिल को उस वक्त तक सुकून हासिल न होगा जब तक कि मैं अपनी बेइज्जती का बदला न ले लूं।

मारीच : मगर यह इतना आसान न होगा लंका महाराज। मुझे याद है कि आज से काफी दिन पहले किस तरह श्री राम चंद्र जी ने श्री विश्वामित्र की गुजारिश पर राक्षसों का सत्यानाश किया था। उन नुक्सान उठाने वालों में एक बदकिस्मत मैं भी था। वह तो किस्मत मेहरबान थी कि ज़ख्मी हो कर समुंद्र में जा गिरा था और काफी दिनों बाद इलाज मुआलजे के बाद सेहतयाब हो पाया था।

रावण : मुझे सब मालूम है। इसलिए तो राजा दशरथ के बेटे राम से वह बदला लूंगा कि रहती दुनिया उसे याद रखेगी। वैसे भी वह दरबदरी की जिंदगी जीने पर मजबूर है।

मारीच : आप ग़फ़लत में पड़े हुए हैं लंका महाराज। श्री राम चंद्र घर से निकाले नहीं गए हैं बल्कि वह तो राक्षसों और आपकी हुकूमत के ख़ात्मे के लिए बस एक बहाने से यहां नमूदार हुए हैं।

रावण : (बेहद गुस्से से) क्या बकता है मारीच ? कुछ होश में तो है तू ? तुझे पता है कि तू किससे बात कर रहा है ?

मारीच : गुस्ताख़ी माफ़ हुजूर। यह सच है कि श्री राम चंद्र जी से बढ़ कर इस दुनिया में न कोई सच्चाई पसंद है और न ही बेहतर इंसान। वह तीनों लोकों के मालिक हैं। उनकी बेगम सीता सरापा लक्ष्मी हैं।

रावण : मैं उसे कैद में ला कर ज़िल्लत व रूसवाई के मज़े चखाना चाहता हूं।

मारीच : उनको कैद में ले कर आना भी आसान न होगा। सूरज की रौशनी को कोई छीन नहीं सका लंकेश महाराज।

रावण : (गुस्से से) तुम दुश्मनों का पक्ष ले रहे हो मारीच। तुम्हें उनकी तारीफ़ करने के बजाए हमारा हौसला बढ़ाना चाहिए कि हम उनसे अपनी बेइज़्ज़ती का बदला ले सकूं।

मारीच : मैं कहे देता हूं कि राम चंद्र जी की एक नज़र आपकी लंका को खाक में मिला देगी।

रावण : अब अगर तुम ने उसकी तारीफ़ में एक शब्द भी निकाला तो तुम्हारी जुबान खींच लूंगा।

(मारीच डर जाता है। फिर सहमते हुए कहता है।)

मारीच : गुस्ताख़ी माफ़ हुजूर। आप जो कहेंगे वह मैं करने के लिए तैयार हूं।

रावण : (खुश होते हुए) शाबाश। मुझे तुम से यही उम्मीद थी मारीच। तुम मेरी जान की फ़िक्र मत करो। मैं मरुंगा या जीऊंगा। तुम्हें इससे मतलब नहीं। बस यह बताओ कि क्या तुम मेरे लिए हिरण बनना क़बूल करते हो ?

मारीच : मैं दूरदेश हूँ। भलाई चाहता हूँ। मुझको अपने मरने की ज़रा भी परवाह नहीं। मैं तो जानता हूँ कि श्री राम चंद्र जी के हाथों मारा जाऊंगा तो सीधा बैकुंठ जाऊंगा।मुझे ग़म और फ़िक्र इस बात की है आपकी वही दुर्गत होगी जो चोर की पकड़े जाने पर होती है। या फिर मैदाने जंग में हारे हुए फौजियों की होती है।

रावण : क्या बकता है तू ? किसे हिम्मत है कि वह मेरे जैसे ताक़तवर राजा को शिकस्त दे।

मारीच : याद रखिएगा महाराज। आप पर मुश्कें कसी जाएंगी। यमराज हथकड़ी पहनाएंगे और फिर नर्क का कैदखाना नसीब होगा।लेकिन मैं जानता हूँ कि आपको मेरी बात अभी बुरी लग रही है। मगर सच्चाई यही है। और सच्चाई हमेशा बहुत कड़वी होती है।

रावण : यह बताओ। तुम मेरी मदद को तैयार हो या नहीं ?

मारीच : मैं तैयार हूँ महाराज। मैं तैयार हूँ।

रावण : (बेहद खुश होते हुए) शाबाश। मुझे तुम से ऐसी ही उम्मीद थी मारीच। ऐसी ही उम्मीद थी। देखना, अब आगे आगे होता है क्या।

(वह ज़ोर ज़ोर से ठहाका लगाता है।)

रावण : आओ मारीच। मेरे साथ आओ। अब हमारे पास एक मिनट का भी वक़्त ज़ाया करने के लिए नहीं है।

मारीच : (पुरजोश हअंदज़ में) चलिए महाराज।

(दोनों आगे बढ़ते हैं।)

(अंधेरा)

सीन न. 17

मक़ाम : दंडका जंगल

(सीता जंगल में फूल जमा कर रही हैं। तभी उनकी नज़र एक बेहद ख़ूबसूरत हिरण पर पड़ती है। वह उसे देख कर तअज्जुब में पड़ जाती है।)

सीता : हे भगवान ! ऐसी ख़ूबसूरत हिरण मैं ने अपनी ज़िंदगी में नहीं देखी। क्या अजीब मख़लूक है। इसकी जितनी भी तारीफ़ की जाए वह कम है। (फिर वह वह जोश में पुकारती हैं।) लक्ष्मण। कहां हो। यहां आओ। मेरे सरताज। आप कहां हैं ? जल्दी आईए। इस प्यारे हिरण को देखिए। क्या क्या रंग बदल रहा है। कभी सुनहरी तो कभी चांदनी।

(सीता हिरण को पकड़ने की कोशिश करती हैं तो वह थोड़ी दूर चला जाता है। वह फिर उसके पास जाती हैं। वह और दूर चला जाता है।)

इतने में लक्ष्मण आता है। राम भी आते हैं।)

लक्ष्मण : क्या बात है भाभी ? आप क्यों आवाज़ दे रही थीं ?

सीता : ज़रा इस हिरण को देखो। आह। ऐसा ख़ूबसूरत जानवर मैं ने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा।

(वह दोनों भी ग़ौर से उसकी ओर देखने लगते हैं।)

लक्ष्मण : इससे होशियार रहने की ज़रूरत है भाभी। यह कोई आम सा जानवर नहीं मालूम होता। मुझे तो लगता है कि यह कमबख्त ख़ूबसूरत हिरण के वेष में कोई राक्षस है। और हो न हो, यह हमें फंसाने की कोई चाल हो।

सीता : नहीं। नहीं। यह अस्ली का हिरण है। इसे मेरे पास पकड़ कर ले आओ। इसे मैं हमेशा अपने पास रखूंगी। इसे पाल पोस कर और बड़ा करूंगी।हम लोगों के लिए अयोध्या वापसी का दिन वैसे भी अब बहुत करीब आ रहा है। और हमारे महल में इसकी ख़ूबसूरती के क्या ख़ूब चर्चे होंगे।

(लक्ष्मण परेशान हो कर राम की तरफ देखते हैं। वह भी उसकी उलझन पर मुस्कुराते हैं।)

सीता : देखो तो सही। क्या पल में यह सोने का हो जाता है और पलमेंचांदी का। यह कोई मामूली हिरण नहीं है। यह जरूर जन्त से आया हुआ कोई खास जानवर है जिसे सिर्फ हमारे लिए भेजा गया है। अगर तुम इसे पकड़ कर नहीं ला सकते लक्ष्मण तो इसे मार कर ही मेरे पास ले आओ। मैं इसका खूबसूरत चमड़ा तो कम से कम अपने साथ ले कर जाऊंगी।

राम : मगर किसी जानदार को इस तरह क़त्ल करना कहां का इंसाफ़ होगा महारानी सीता। आओ। लक्ष्मण। हम इसे ज़िंदा ही पकड़ कर लाने की कोशिश करेंगे।

लक्ष्मण : (पुरजोश अंदाज़ में) आईए भैया।

(दोनों हिरण की तरफ बढ़ते हैं। वह वहां से भाग जाता है। यह लोग इसका पीछा करते हैं। सीता पुरतजस्सुस नज़रों से सारा नज़ारा देखती रहती हैं। इतने में उनके सामने रावण एक साधु के वेष में आता है। सीता उसे पहचान नहीं पातीं। लेकिन वह उन्हें इस नज़र से देखता है जिससे लगता है कि वह कोई नेक आदमी नहीं है। वह थोड़ा सहम जाती हैं।)

रावण : डरो मत। मैं लंका नरेश रावण हूं। मेरे जैसा इंसान न तो तुम ने कभी देखा है न देखा होगा। मेरी बहादुरी और लियाक़त के चर्चे सारी दुनिया में हैं। मैं तुम्हें अपनी महारानी बना कर तुम्हारी इज़्ज़तअफ़ज़ाई करना चाहता हूं देवी सीता। हालांकि मैं जानता हूं कि तुम राजा दशरथ की बहु हो। और राम तुम्हारा शौहर है। मगर इस बेमेल शादी पर मैं जितना भी ग़म खाऊं वह कम है।

सीता : (गुस्से से) ख़बरदार जो मेरे शौहर और मेरे स्वर्गवासी ससुर के खिलाफ़ एक लफ़्ज़ और भी निकाला तो ।

रावण : फिर क्या कर लोगी ?

सीता: मैं तुम्हारी जान ले लूंगी।

(रावण ज़ोर से ठहाका लगाता है।)

रावण : ठीक है। यह जान भी तुम्हारी ख़ातिर हाज़िर है। आओ। ले कर दिखाओ।

(वह खूंखार अंदाज़ में उनकी ओर बढ़ता है। सीता राम और लक्ष्मण का नाम ले कर चिल्लाती हैं मदद के लिए मगर कोई मदद नहीं मिल पाती क्योंकि वे हिरण का पीछा करते हुए दूर निकल चुके हैं।)

(रावण झट सीता का हाथ पकड़ कर घसीटते हुए वहां से ले कर चला जाता है। सीता की चीख जंगल में गूंजती रहती है।)

(अंधेरा)

सीन न. 18

मक़ाम : रावण की वाटिका

(सीता जी डरी सहमी एक जगह बैठी हैं। कुछ राक्षसियां उन्हें घेरे हुई हैं।)

राक्षसी 1 : ओ सीता ! परोसी हुई थाली में लात न मारो। अपनी किसमत पर नाज़ करो।
रावण रावण नहीं बल्कि पोलिस्थ की नस्ल में एक महान औतार है।

राक्षसी 2 : और शायद तुम्हें मालूम नहीं कि पोलिस्थ ब्रह्मा के बेटे थे। जिनका जन्म मामूली तरीके से नहीं हुआ था। बल्कि ख़ालिस दिल की ख़्वाहिश से पोलिस्थ के नूरे नज़र विश्वकर्मा की पैदाइश भी यूँही हुई थी। और जिसको ईश्वर ने रावण जैसा आफ़ताब वे सूरज जैसा ख़ानदान अता फ़रमाया था।

राक्षसी 3 : रावण इस्मे बामुसम्मा है। यानि दुश्मनों को ज़ेर करने वाला और धूल चटाने वाला। अगर ऐसे अज़ीम और ताअज़ीम के क़बिल रावण की तुम ने क़द्र न की तो समझो कि तुम्हारी ज़िंदगी बेकार है।

राक्षसी 1 : 33 कोट देवता को उसने मैदाने—जंग में ज़ेर किया है। रावण के लड़के मेघनाद ने इंद्र को जीत लिया था। ऐसा प्रतापी और बहादुर राजा की बेइज़्ज़ती करना नादानी नहीं तो और क्या है। और कौन है जो उसके जैसा है इस दुनिया में ?

राक्षसी 3 : रावण तुम्हारे सारे नख़रे उठाने को तैयार है। हालांकि वह तुम्हें चाहता तो तुम्हें क़ैदे—तनहाई में डाल कर अपनी मौत आप मरने के लिए छोड़ देता। मगर उसने तुम पर रहम किया और तुम्हारी इज़्ज़तअफ़ज़ाई की। तुम्हें साफ़ सुथरी जगह पर रखा। और मुहब्बत से पेश आया।

राक्षसी 1 : तुम्हें मालूम नहीं जानकी। रावण वह शख्स है जिसके ख़ौफ़ से सूरज कांपता है और जिसकी मर्ज़ी से हवा भी अपना रुख़ बदल लेती है।तुम भी कैसी अहमक और बेवकूफ़ हो। तुम राम चंद्र की आस लगाए बैठी हो। यह तुम्हारी महज़ नादानी है। वह ज़िंदगी भर अब तुम से मिल नहीं सकते। राज पाट छोड़ कर जंगल की ख़ाक छानने वाले का साथ देना क्या कोई अक़लमंदी की बात है ?

(सीता जी इस पर नाराज़ हो जाती हैं। वह कहती हैं।)

सीता : खबरदार। जो तुम लोगों ने अब आगे एक लफ़्ज़ भी निकाला तो।देखो, अगर तुम लोगों का मुझे नुक़सान पहुंचाने का इरादा है तो बेशक पहुंचा सकती हो। मगर मैं एक लफ़्ज़ अपने सरताज और अपने आका श्री राम चंद्र जी के खिलाफ़ नहीं सुन सकती। उनकी शान में कोई गुस्ताख़ी करे, यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती।रावण चाहे जैसा भी है। मगर मेरे नज़दीक उसकी हैसियत एक मामूली मकड़ी से भी ज़्यादा नहीं है। जिसकी ताक़त भी कमज़ोर होती है और जिसका घर भी कमज़ोर और बोदा होता है। वह न तो अपने आपको महफूज़ रख सकता है और न किसी दूसरे को।

(इतने में हनुमान जी आते हैं। उनको देखते ही सारी राक्षसियां ख़ौफ़ज़दह हो कर भागने और चीखने चिल्लाने लगती हैं।)

(सीता जी हैरान व परेशान उन्हें देखती हैं। हनुमान जी अदब से उनके आगे सर झुका देते हैं।)

हनुमान : सीता देवी को मेरा प्रणाम। मैं हनुमान हूं। मैं राम जी का भेजा हुआ दूत हूं और आपको तलाश करते करते यहां तक पहुंचा हूं।

सीता : अगर तुम वाकई मेरे सरताज के पैगांबर और सिप्पेसालार हनुमान ही हो तो कुछ फर्क नहीं। मगर अगर तुम उनके वेष में कोई और हो तो मेरे पास से दूर हो जाओ।

हनुमान : आप ख़ौफ़ज़दह न हों माता श्री। मैं श्री राम चंद्र जी का भेजा हुआ दूत हनुमान ही हूं।माता जी। सुनिए। श्री राम चंद्र जी की आंखें कमल के मषाबा हैं। चेहरे पर पूर्णमासी के चांद का नूर है। और दिल में सूरज का जलाल और तेज है। मगर वह हद दर्जा रहीम और शफीक भी हैं। कमज़ोरों और लाचारों से मुहब्बत और उनकी हिफ़ाज़त करना उनका दीन है। और उनकी इज़्ज़तअफ़ज़ाई करना उनकी शान है।

सीता : तुम ठीक कहते हो। तुम ठीक कहते हो। मेरे सरताज बिल्कुल ऐसे ही हैं। तुम मुझे उनके पास ले चलो। इस कैद व बंद की ज़िंदगी से मुझे बाहर निकाला।

हनुमान : आप खातिर जमा रखिए। मैं यहां इसी गर्ज से यहां आया हूं। अगर आपको मेरी बातों पर यकीन नहीं आ रहा हो तो ज़रा इसे देखिए।

(वह सीता जी को राम चंद्र जी की अंगूठी दिखाते हैं। वह देखते ही खुश हो जाती हैं।)

सीता : (उसे अपने हाथ में गौर से ले कर देखते हुए) यह अंगूठी तो उन ही की है। उन ही की है यह अंगूठी।

हनुमान : अब फ़िक्र की कोई बात नहीं है जानकी माता। श्री राम चंद्र जी मुझ से इशारा पाते ही जंग के लिए उठ दौड़ेंगे और समुंदर पर तीरों का पुल बंध जाएगा। बानरों का लशकर दम के दम लंका पर हमला आवर हो जाएगा।

सीता : मैं चाहती हूं कि तुम राक्षसों और उसकी पूरी फौज का हमेशा हमेश के लिए खात्मा कर दो। मेरी रूह को तभी सुकून हासिल होगा।

हनुमान : आप फ़िक्र मत कीजिए माता श्री। समझ लीजिए कि इन राक्षसों की तबाही की घड़ी आ गई है। यह देखिए।

(वह वाटिका में आग लगा देते हैं। चारों तरफ आग फैल जाती है। रावण के गुस्से से चिंघाड़ने की आवाज़ सुनाई देती है। एक दहशत का माहौल छा जाता है। आसमान पर गरज चमक के साथ बदली छा जाती है। हनुमान और सीता चौकन्ने हो जाते हैं।)

रावण : इस शैतान को कैद कर लो और ऐसी सज़ा दो कि रहती दुनिया इसे याद रखे।

(रावण उन पर हमलावर होता है। शदीद लड़ाई छिड़ जाती है। राम चंद्र और लक्ष्मण भी उस लड़ाई में शामिल हो जाते हैं। हनुमान अपनी पूंछ में आग लगा कर पूरे लंका को जला डालते हैं और फिर उस आग को बुझाने के लिए समुद्र में कूद जाते हैं। समुद्र में पुल बनाया जाता है और पूरी बानर फौज पहुंच जाती है। मगर अख़ीर में हनुमान और राम और लक्ष्मण जी को फ़तह नसीब होती है। राम के हाथों रावण मारा जाता है।)

(अंधेरा)

गीत :

लंका का राज-पाट भीकन को सौंप कर

उड़ते हुए फिज़ाओं में पुष्पक विमान पर

रघुबर जी सती को ले आए अपने घर
ठंडा था उनको देख के माताओं का जिगर

चौदह बरस के बाद चेरागां अवध में था
फिर चौदहवीं का चांद दरख्शां अवध में था

मसरूर एक जहां थी खिलकत थी शादमां
सीता सी पाकबाज़ से बदबीं थे बदगुमां

सीता की पारसाई के कायल थे दिल से राम
मद्देनज़र था फिर भी रियाया का एहतेराम
(शायर : जगेश्वर नाथ बेताब बरेलवी)

नोट : यहां पर इस गीत के बाद स्टेज पर सारे किरदार एक एक कर के नमूदार होते हैं।
और फिर सब मिल कर एक सुर में यह गीत गाते हैं।

लबरेज़ है शराबे हकीकत से जामे हिंद
सब फ़लसफ़ी हैं ख़ित्त-ए-मगरिब के राम हिंद

यह हिंदियों का फ़लक रस का है असर
रिफ़ात में आसमां से ऊंचा है बाम हिंद

इस देश में हुए हैं हजारों मलिक सरिश्त
मशहूर जिनके दम से है दुनिया में नाम हिंद

है राम के वजूद पे हिंदुस्तां को नाज़
अहले नज़र समझते हैं उनको इमाम हिंद

ऐजाज उस चेरागे हिदायत का है यही
रौशन तराज़ सेहर है, ज़माना में शाम हिंद

तलवार का धनी था, शुजाअत में फ़र्द था
पाकीज़गी और जोशे मुहब्बत में फ़र्द था

(शायर : अल्लामा इक़बाल)(पर्दा गिरता है ।)समाप्त.....

